INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान

पशु परिचर

(Animal Attendant)

राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड

भाग – 1

राजस्थान का सामान्य ज्ञान (GK) + विविध

प्रस्तावना

प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स **"राजस्थान पशु परिचर (Animal Attendant)"** को एक विभिन्न अपने - अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है। ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड (RSMSSB)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा **"राजस्थान पशु परिचर (Animal Attendant)" परीक्षा** में पूर्ण संभव मदद करेंगे।

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स मे कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती हैं। अतः आप सूची पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : https://www.infusionnotes.com

WhatsApp करें - https://wa.link/m8y06r

Online Order करें - https://shorturl.at/fpKN5

मूल्य : (₹)	संस्करण : नवीनतम

राजस्थान का इतिहास		
क्र. सं.	अध्याय	पेज नंबर
1.	प्रागैतिहासिक स्थल (सभ्यताएं)	1
2.	ऐतिहासिक केंद्र	9
3.	प्रमुख राजवंशों के महत्वपूर्ण शासकों की राजनीतिक एवं सांस्कृतिक उपलब्धियां	10
4.	स्वतंत्रता आंदोलन (1857 का स्वतंत्रता संग्राम)	69
5.	राजस्थान का एकीकरण	77
6.	राजस्थान में किसान एवं जनजाति आंदोलन	82
राजस्थान की कला संस्कृति		
1.	वास्तुकला की मुख्य विशेषताएँ – ❖ किले और स्मारक (छतरियाँ) ❖ राजस्थान की प्रमुख हवेलियाँ ❖ प्रमुख महल	103
2.	चित्रकला	121
3.	हस्त कला / हस्तशिल्प	123
4.	राजस्थान की भाषा व राजस्थान की बोलियाँ	132

5.	वेशभूषा एवं आभूषण	135
6.	मेले एवं त्यौहार	137
7.	राजस्थान के लोकसंगीत (लोकगीत)	148
8.	राजस्थान के प्रमुख लोक नृत्य एवं लोक नाट्य	156
9.	राजस्थान के धार्मिक आंदोलन प्रमुख संत सम्प्रदाय	170
10.	राजस्थान के लोक देवता एंव लोक देवियाँ	178
11.	राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व	187

राजस्थान की राज्यव्यवस्था

1.	राज्यपाल	190
2.	मुख्यमंत्री और मंत्रिपरिषद्	197
3.	राजस्थान विधानसभा	205
4.	उच्च न्यायालय	214
5.	स्थानीय स्वशासन एवं पंचायती राज संस्था	221
6.	राजस्थान लोक सेवा आयोग	231
7.	राज्य मानवाधिकार आयोग	234
8.	लोकायुक्त	236

9.	राज्य निर्वाचन आयोग	238
10.	राज्य सूचना आयोग	240
	<u>राजस्थान का भूगोल</u>	
1.	सामान्य परिचय	242
2.	प्रमुख भू – आकृतिक प्रदेश एवं उनकी विशेषताएं	258
3.	जलवायु की विशेषताएं	270
4.	प्रमुख नदियाँ एवं झीलें	278
5.	प्राकृतिक वनस्पति	298
6.	मृदा	306
7.	प्रमुख फसलें	308
8.	राजस्थान में पशुपालन	314
9.	प्रमुख सिंचाई परियोजनाएँ एवं जल संरक्षण तकनीकें	321

राजस्थान का इतिहास

अध्याय – 1
प्रागैतिहासिक स्थल (सभ्यताएं)

पाषाणकालीन सभ्यता

1. बागौर (भीलवाड़ा)

प्रिय छात्रों किसी भी सभ्यता का विकास किसी नदी के किनारे होता है क्योंकि जल ही जीवन है जल की आवश्यकता खेती के लिए और अन्य उपयोगों के लिए की पड़ती है।

- इसी प्रकार भीलवाड़ा जिले की माण्डल तहसील में कोठारी नदी के तट पर स्थित इस पुरातात्विक स्थल का उत्खनन 1967-68 से 1969-70 की अवधि में राजस्थान राज्य पुरातत्व विभाग एवं दक्कन कॉलेज, पुणे के तत्त्वावधान में श्री वी.एन. मिश्र एवं डॉ. एल.एस. लेशनि के नेतृत्व में हुआ है।
- यहाँ से मध्य पाषाणकालीन (Mesolithic) लघु पाषाण उपकरण व वस्तुएँ (Microliths) प्राप्त हुई हैं।
- बागौर के उत्खनन में प्राप्त प्रस्तर उपकरण काल विभाजन के क्रम से तीन चरणों में विभाजित किये गये हैं। प्रथम चरण 3000 वर्ष ईसा पूर्व से लेकर 2000 वर्ष ईसा पूर्व तक, द्वितीय चरण 2000 वर्ष ईसा पूर्व से 500 वर्ष ईसा पूर्व का एवं तृतीय चरण 500 वर्ष ईसा पूर्व से लेकर प्रथम ईस्वी सदी तक की मानव सभ्यता की कहानी कहता है।
- इन पाषाण उपकरणों को **स्फटिक** (Quartz) एवं चर्ट पत्थरों से बनाया जाता था। इनमें मुख्यतः पृथुक (Flake), फलक (Blade) एवं अपखण्ड (Chip) बनाये जाते थे। ये उपकरण आकार में बहुत छोटे (लघु अश्म उपकरण-Microliths) थे।
- बागौर में उत्खनन में पाषाण उपकरणों के साथ-साथ एक मानव कंकाल भी प्राप्त हुआ है।
- यहाँ पाये गये लघु पाषाणा उपकरणों में ब्लेड, छिद्रक, स्क्रेपर, बेधक एवं चांद्रिक आदि प्रमुख हैं।
- ये पाषाण उपकरण चर्ट, जैस्पर, चाल्डेसनी, एगेट, क्वार्टजाइट, फ्लिंट जैसे कीमती पत्थरों से बनाये जाते थे। ये आकार में बहुत छोटे आधे से पौने इंच के औजार थे ये छोटे उपकरण संभवतः किसी लकड़ी या हड्डी के बड़े टुकड़ों पर आगे लगा दिये जाते थे।
- इन्हें मछली पकड़ने, जंगली जानवरों का शिकार करने, छीलने, छेद करने आदि कार्यों में प्रयुक्त किया जाता था। इन उपकरणों से यहाँ के लोगों का मुख्य व्यवसाय आखेट करना एवं कंद-मूल फल एकत्रित करने की स्थिति पर प्रकाश पड़ता है।
- यहाँ के प्रारंभिक स्तरों पर घर या फर्श के अवशेष नहीं मिलना साबित करता है कि यहाँ का मानव घुमक्कड़ जीवन जीता होगा।
- बागौर में द्वितीय चरण के उत्खनन में केवल 5 ताम्र उपकरण मिले हैं, जिसमें एक सूई (10.5 सेमी लम्बी), एक कुन्ताग्र (Spearhead), एक त्रिभुजाकार शस्त्र, जिसमें दो छेद हैं, प्रमुख हैं।
- इस चरण के उत्खनन में मकानों के अवशेष भी मिले हैं जिससे पुष्टि होती है कि इस समय मनुष्य ने एक स्थान पर स्थायी जीवन जीना प्रारम्भ कर दिया था।
- इस काल की प्राप्त हड्डियों में गाय, बैल, मृग, चीतल, बारहसिंघा, सूअर, गीदड़, कछुआ आदि के अवशेष मिले हैं।
- कुछ जली हुई हड्डियाँ व मांस के भुने जाने के प्रमाण मिलने से अनुमान है कि इस काल का मानव मांसाहारी भी था तथा कृषि करना सीख चुका था।
- उत्खनन के तृतीय चरण में हड्डियों के अवशेष बहुत कम होना स्पष्ट करता है कि इस काल (500 ई. पूर्व से ईसा की प्रथम सदी) में मानव संस्कृति में कृषि की प्रधानता हो गई थी।
- **बागौर उत्खनन** में कुल **5 कंकाल** प्राप्त हुए हैं, जिनसे स्पष्ट होता है कि शव को दक्षिण पूर्व-उत्तर पश्चिम में लिटाया जाता था तथा उसकी टांगे मोड़ दी जाती थी।
- सभ्यता के तृतीय चरण में शव को उत्तर-दक्षिण में लिटाने एवं टांगे सीधी रखने के प्रमाण मिले हैं।
- शव को मोती के हार, ताँबे की लटकन, मृद्भाण्ड, मांस आदि सहित दफनाया जाता था। खाद्य पदार्थ व पानी हाथ के पास रखे जाते थे तथा अन्य वस्तुएँ आगे-पीछे रखी जाती थी।
- तृतीय चरण के एक कंकाल पर ईंटों की दीवार भी मिली है, जो समाधि बनाने की द्योतक है। मिट्टी के बर्तन यहाँ के द्वितीय चरण एवं तृतीय चरण के उत्खनन में मिले हैं।
- द्वितीय चरण के मृद्भाण्ड मटमैले रंग के, कुछ मोटे व जल्दी टूटने वाले थे। इनमें शरावतनें, तश्तरियाँ, कटोरे, लोटे, थालियाँ, तंग मुँह के घड़े व बोतलें आदि मिली हैं। (ये मृद्भाण्ड रेखा वाले तो थे परन्तु इन पर अलंकरणों का अभाव था।
- ऊपर से लाल रंग लगा हुआ है। ये सभी हाथ से बने हुए हैं) (तृतीय चरण के मृद्भाण्ड पतले एवं टिकाऊ हैं तथा चाक से बने हुए हैं। इन पर रेखाओं के अवशेष मिले हैं, परन्तु अलंकरण बहुत कम मिले हैं।
- (आभूषण: बागौर सभ्यता में मोतियों के आभूषण तीनों स्तरों के उत्खनन में प्राप्त हुए हैं। हार तथा कान की लटकनों में मोती बहुतायत से प्रयुक्त किये जाते थे।
- ये मोती एगेट, इन्द्रगोप व काँच के बने होते थे। मकान : बागौर में मकानों के अवशेष द्वितीय एवं तृतीय चरण में प्राप्त हुए हैं। हार तथा कान की लटकनों में मोती बहुतायत

से प्रयुक्त किये जाते थे। ये मोती एगेट, इन्द्रगोप व काँच के बने होते थे।)

- **मकान : बागौर में मकानों के अवशेष द्वितीय एवं तृतीय चरण** में प्राप्त हुए हैं। मकान पत्थर के बने हैं। फर्श में भी पत्थरों को समतल कर जमाया जाता था।
- बागौर में मध्यपाषाणकालीन पुरावशेषों के अलावा लौह युग के उपकरण भी प्राप्त हुए हैं। इस सभ्यता के प्रारंभिक निवासी आखेट कर अपना जीवन यापन करते थे। परवर्ती काल में वे पशुपालन करना सीख गये थे। बाद में उन्होंने कृषि कार्य भी सीख लिया था।

2. कालीबंगा की सभ्यता -

कालीबंगा की सभ्यता एक नदी के किनारे बसी हुई थी। नदी का नाम है – **सरस्वती नदी** । इसे **द्रेषनदी, मृतनदी, नटनदी** के नाम से भी जानते हैं।
यह सभ्यता हनुमानगढ़ जिले में विकसित हुई थी हनुमानगढ़ जिले में एक अन्य सभ्यता जिसे **पीलीबंगा** की सभ्यता कहते हैं विकसित हुई।

इस सभ्यता की खोज -

- इस सभ्यता की सबसे पहले जानकारी देने वाले एक पुरातत्ववेत्ता एवं भाषा शास्त्री एल.पी. टेस्सिटोरीथे। इन्होंने ही इस सभ्यता के बारे में सबसे पहले परिचय दिया लेकिन इस सभ्यता की तरफ किसी का पूर्णरूप से ध्यान नहीं था इसलिए इसकी खोज नहीं हो पाई।
- इस सभ्यता के खोजकर्ता **अमलानंद घोष** है। इन्होंने 1952 में सबसे पहले इस सभ्यता की खोज की थी।
- इनके बाद में इस सभ्यता की खोज दो अन्य व्यक्तियों के द्वारा भी की गई थी जो 1961 से 1969 तक चली थी।

1. **बृजवासीलाल (बी.बी. लाल)**
2. **बीके (बालकृष्ण) थापर**

इन्हीं दोनों ने इस सभ्यता की विस्तृत रूप से खोज की थी

एल.पी. टेस्सिटोरी के बारे में –

- ये इटली के के निवासी थे। इनका जन्म सन् 1887 में हुआ। और यह अप्रैल 1914 ईस्वी में भारत मुंबई आए। जुलाई 1914 में यह जयपुर (राजस्थान) आये। बीकानेर राज्य इनकी कर्म स्थली रहा है।
- उस समय के तत्कालीन राजा महाराजागंगा सिंह जी ने इन्हें अपने राज्य के सभी प्रकार के चारण साहित्य लिखने की जिम्मेदारी दी।
- बीकानेर संग्रहालय भी इन्होंने ही बनवाया है ये एक भाषा शास्त्री एवं पुरातत्ववेत्ता थे उन्होंने राजस्थानी भाषा के दो प्रकार बताए थे।
  1. पूर्वी राजस्थानी 2. पश्चिमी राजस्थानी
- इस सभ्यता का कालक्रम **कार्बन डेटिंग पद्धति** के अनुसार 2350 ईसा पूर्व से 1750 ईसा पूर्व माना जाता है।
- कालीबंगा शब्द "सिंधीभाषा" का एक शब्द है जिसका शाब्दिक अर्थ होता है – **"काले रंग की चूड़िया"**। इस स्थल से काले रंग की चूड़ियों के बहुत सारी ढेर प्राप्त हुए इसलिए इस सभ्यता को कालीबंगा सभ्यता नाम दिया गया।
- कालीबंगा की सभ्यता भारत की ऐसी पहली सभ्यता स्थल है जो **स्वतंत्रता के बाद खोजी** गई थी। यह एक **कांस्य युगीन सभ्यता** है।
- हनुमानगढ़ जिले से इस सभ्यता से संबंधित जो भी वस्तुएं प्राप्त हुई है उनको सुरक्षित रखने के लिए राजस्थान सरकार के द्वारा **1985-86 में कालीबंगा संग्रहालय** की स्थापना की गई थी। यह संग्रहालय **हनुमानगढ़** जिले में स्थित है।

इस सभ्यता की विशेषताएँ –

- इस सभ्यता की सड़कें एक दूसरे को **समकोण** पर काटती थी। इसलिए यहाँ पर मकान बनाने की पद्धति को **"ऑक्सफोर्ड पद्धति"** कहते हैं। इसी पद्धति को **'जाल पद्धति, ग्रीक, चेम्सफोर्ड पद्धति'** के नाम से भी जानते हैं।
- मकान कच्ची एवं पक्की ईंट के बने हुए थे, आरम्भ में यें कच्ची ईंटें थीं इसलिए इस सभ्यता को दीन हीन सभ्यता भी कहते हैं। इन ईंटों का आकार 30×15×7.5 है।
- इन मकानों की खिड़की एवं दरवाजे पीछे की ओर होते थे।
- यहाँ पर जो नालियां बनी हुई थी वह लकड़ी (काष्ठ) की बनी होती थी। आगे चलकर इन्हीं नालियों का निर्माण पक्की ईंटों से होता था।
  (विश्व में एकमात्र ऐसा स्थान जहां लकड़ियों की बनी नालियाँ मिली है वह कालीबंगा स्थल है) **(परीक्षा की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण)**
- विश्व की प्राचीनतम **जुते हुए खेत** के प्रमाण इसी सभ्यता से मिले हैं।
- यहाँ पर मिले हुए मकानों के अंदर की दीवारों में दरारें मिलती हैं इसलिए माना जाता है कि विश्व में प्राचीनतम भूकंप के प्रमाण यहीं से प्राप्त होते हैं।
- यहाँ के लोग एक साथ में **दो फसलें** करते थे अर्थात् फसलों के होने के प्रमाण भी यहीं से मिलते हैं **जौ और गेहूं।**
- यहाँ पर उत्खनन के दौरान **यज्ञकुंड / अग्नि वेदिकाएं** प्राप्त हुए हैं यहाँ के लोग **बलिप्रथा** में भी विश्वास रखते थे।
- इस सभ्यता का पालतू जीव **कुत्ता** था। इस सभ्यता के लोग **ऊँट** से भी परिचित थे इसके अलावा **गाय, भैंस, बकरी, घोड़ा से** भी परिचित थे।
- विश्व में प्राचीनतम् नगर के प्रमाण यहीं पर मिले हैं इसलिए इसे **नगरीय सभ्यता** भी कहते हैं यहाँ पर मूर्तिपूजा, देवी / देवता के पूजन, चित्रांकन या मूर्ति का कोई प्रमाण नहीं मिला है।

- यहाँ से **ब्राह्मी लिपि** में नाम अंकित **दो कांसे** की सीलें भी प्राप्त हुई है ।
- यहाँ से उत्खनन में **डॉ. हन्नारिड** को प्राप्त मिट्टी का **कटोरा स्वीडन के लूण्ड** संग्रहालय में सुरक्षित है।
- यहाँ के निवासी मुख्य रूप से **चावल की खेती** करते थे।
- यहाँ के मकानों का निर्माण **ईंटों से** होता था ।
- यहाँ से प्राप्त **मृद्‌भाण्ड मुख्यत : लाल या गुलाबी रंग** के थे ।
- यहाँ से गांधार शैली की मृण मूर्तियाँ, टोंटीदार घड़े, घण्टाकार मृदपात्र एवं **कनिष्क कालीन मुद्राएँ** प्राप्त हुई हैं ।
- रंग महल से ही गुरु-शिष्य की मिट्टी की मूर्ति प्राप्त हुई है ।
- इसे **कुषाण कालीन सभ्यता** के समान माना जाता है । **(परीक्षा के दृष्टि से महत्त्वपूर्ण)**
- रंगमहल में बसने वाली बस्तियों के तीन बार बसने एवं उजड़ने के प्रमाण मिले हैं ।

8. ओझियाना (भीलवाड़ा) :

- **भीलवाड़ा के बदनोर** के पास **खारी नदी** के तट पर स्थित यह स्थल ताम्र युगीन **आहड़ संस्कृति** से संबंधित है ।
- इस स्थल का उत्खनन **बी. आर. मीणा** तथा **आलोक त्रिपाणी** द्वारा वर्ष 1999-2000 में किया गया ।
- यह पुरातात्विक स्थल पहाड़ी पर स्थित था जबकि **आहड़ संस्कृति** से जुड़े अन्य स्थल नदी घाटियों में पनपे थे ।
- यहाँ से वृषभ तथा गाय की मृण्मय मूतियां प्राप्त हुई हैं जिन पर **सफेद रंग** से चित्रण किया हुआ है ।

9. नगरी (चित्तौड़गढ) :

- नगरी नामक पुरातात्विक स्थल चित्तौड़गढ़ में बेड़च नदी के तट पर स्थित है, जिसका **प्राचीन नाम माध्यमिका** मिलता है ।
- यहाँ पर सर्वप्रथम **उत्खनन कार्य** वर्ष 1904 में **डॉ. डी. आर. भण्डारकर** द्वारा तथा तत्पश्चात् 1962-63 में केन्द्रीय पुरातत्व विभाग द्वारा करवाया गया ।
- यहाँ से **शिवि जनपद** के सिक्के तथा **गुप्त कालीन कला के अवशेष** प्राप्त हुए हैं ।
- प्राचीन नाम 'माध्यमिका' **पतंजलि के महाभाष्य** में मिलता है ।
- यहाँ से ही घोसूण्डी अभिलेख (द्वितीय शताब्दी ईसा पूर्व) प्राप्त हुआ है ।
- नगरी **शिवि जनपद की राजधानी** रही है ।
- यहाँ पर 'कुषाण कालीन स्तर' में नगर की सुरक्षा हेतु निर्मित मजबूत दीवार बनाये जाने के अवशेष प्राप्त हुए हैं ।
- नगरी की खोज **1872 ई. में कार्लाइल** द्वारा की गई ।
- यहाँ से चार **चक्राकार कुएँ** भी प्राप्त हुए हैं ।

10. सुनारी (झुंझुनू) :

- **'सुनारी'** नामक पुरातात्विक स्थल झुंझुनू की खेतड़ी तहसील में काँतली नदी के किनारे स्थित है ।
- यहाँ पर उत्खनन कार्य 1980-81 में राजस्थान राज्य पुरातत्व विभाग द्वारा करवाया गया ।
- यहाँ से **लौहा गलाने की प्राचीनतम भट्टियाँ प्राप्त** हुई है ।
- यहाँ से **सलेटी रंग के मृद्‌भाण्ड** संस्कृति के अवशेष प्राप्त हुए हैं ।
- सुनारी से **मातृ देवी की मृण मूर्तियाँ** तथा धान संग्रहण का कोठा प्राप्त हुआ है ।
- सुनारी से मौर्य कालीन सभ्यता के अवशेष मिले हैं जिनमें **काली पॉलिश युक्त मृद** पात्र हैं।
- जोधपुरा, नोह तथा सुनारी से शुंग तथा कुषाण कालीन अवशेष भी प्राप्त हुए हैं ।
- सुनारी के निवासी भोजन में **चावल का प्रयोग** करते थे तथा **घोड़ों से रथ खींचते** थे ।
- सुनारी से लौहे के तीर, भाले के अग्रभाग, लौहे का कटोरा तथा कृष्ण परिमार्जित मृदपात्र भी मिले हैं ।

11. जोधपुरा (जयपुर) :

- जोधपुरा नामक **पुरातात्विक स्थल जयपुर** जिले की **कोटपुतली तहसील में साबी नदी** के किनारे स्थित है ।
- यह एक **लौह युगीन प्राचीन सभ्यता** स्थल है ।
- यहाँ पर उत्खनन कार्य 1972-73 में **आर.सी. अग्रवाल** तथा **विजय कुमार** के निर्देशन में सम्पन्न हुआ ।
- यह **सलेटी रंग की चित्रित मृद्‌भाण्ड** संस्कृति का महत्त्वपूर्ण स्थल था ।
- जोधपुरा से लौह अयस्क से लौह धातु का निष्कर्षण करने वाली भट्टियाँ भी प्राप्त हुई हैं ।
- इस सभ्यता में मानव ने घोड़े का उपयोग रथ के खींचने में करना प्रारम्भ कर दिया था ।
- जोधपुरा में मकान की छतों पर **टाईल्स** का प्रयोग एवं **छप्पर छाने** का रिवाज था ।
- यह सभ्यता 2500 ईसा पूर्व से 200 ई. के मध्य फली-फूली थी ।
- यहाँ **शुंग एवं कुषाण कालीन सभ्यता** स्थल है ।
- **जोधपुरा एवं सुनारी (झुंझुनू)** से मौर्य कालीन सभ्यता के अवशेष भी प्राप्त हुए हैं ।

12. तिलवाड़ा (बाड़मेर) :

- तिलवाड़ा **बाड़मेर जिले में लूणी नदी** के किनारे स्थित पुरातात्विक स्थल है ।
- यहाँ पर उत्खनन कार्य 1967-68 में राजस्थान राज्य पुरातत्व विभाग द्वारा करवाया गया।
- यहाँ पर उत्खनन का कार्य डॉ. वी. एन. मिश्र के नेतृत्व में किया गया।

- यह एक ताम्र पाषाण कालीन स्थल है जहाँ से 500 ई. पू. से 200 ई. तक विकसित सभ्यताओं के अवशेष मिले हैं ।
- यहाँ से उत्तर पाषाण युग के भी अवशेष प्राप्त हुए हैं ।
- यहाँ एक अग्निकुण्ड मिला है । जिसमें मानव अस्थिभस्म तथा मृत पशुओं के अवशेष मिले हैं ।
- प्राचीन काल में यह स्थान **खेड़गढ़** के नाम से जाना जाता था ।
- तिलवाड़ा में हर वर्ष मल्लिनाथ पशु मेले का आयोजन होता है ।

13. रैढ़ (टोंक) :

- **रैढ़ टोंक जिले** की निवाई तहसील में ढील नदी के किनारे स्थित पुरातात्विक स्थल है ।
- यह एक **लौह युगीन सभ्यता** है ।
- यहाँ पर उत्खनन कार्य 1938-39 में दयाराम साहनी के नेतृत्व में तथा अंतिम रूप में उत्खनन कार्य डॉ. केदारनाथ पूरी के द्वारा करवाया गया ।
- रैढ़ के उत्खनन से बड़ी मात्रा में मिलने वाले लौह उपकरणों तथा मुद्राओं के कारण इसे **प्राचीन भारत का टाटा नगर** कहा जाता है ।
- यह एक धातु केंद्र था जहाँ पर औद्योगिक कार्य एवं निर्यात हेतु उपकरण एवं औजार बनाए जाते थे।
- रैढ़ में उत्खनन से 3075 आहत मुद्राएँ तथा 300 मालव जनपद के सिक्के प्राप्त हुए हैं । **(परीक्षा के दृष्टि से महत्त्वपूर्ण)**
- यहाँ से यूनानी शासक **अपोलोडोटस** का एक खण्डित सिक्का भी प्राप्त हुआ है ।
- रैढ़ के मृदभाण्डों में गोल **"रिंग वेल्स"** एक दूसरे पर लगा दिए जाते थे ।
- रैढ़ में पकाई गई मातृ देवी व शक्ति के विभिन्न रूपों की मूर्तियां प्राप्त हुई हैं ।
- यहाँ से कर्ण फूल, गले का हार, चूड़ियां, पायजेब आदि आभूषणों के प्रमाण प्राप्त हुए हैं ।
- यहाँ से आलीशान इमारतों के अवशेष भी प्राप्त हुए हैं ।
- रैढ़ से मृतिका से बनी यक्षिणी की प्रतिमा प्राप्त हुई है जो संभवतः **शुंग काल** की मानी जाती है ।
- यहाँ से मालव जनपद के 14 सिक्के, 6 सेनापति सिक्के एवं 7 वपू के सिक्के प्राप्त हुए हैं ।
- रैढ़ से **एशिया का अब तक का सबसे बड़ा सिक्कों का भण्डार मिला** है ।
- रैढ़ से जस्ते को साफ करने के प्रमाण मिले हैं ।
- रैढ़ के निवासी मोटा एवं बारीक कपड़ा बनाने में सिद्धहस्त थे ।

14. नगर (टोंक) :

- नगर उणियारा कस्बे के पास स्थित है। इसे **कर्कोट नगर** भी कहा जाता है ।
- इसका प्राचीन नाम 'मालवनगर' था।
- यहाँ पर उत्खनन कार्य 1942-43 में श्री **कृष्ण देव** द्वारा किया गया ।
- यहाँ से बड़ी संख्या में मालव सिक्के तथा आहत मुद्राएँ प्राप्त हुई है । इस नगर में उत्खनन से गुप्तोत्तर काल की **स्लेटी पत्थर** से **निर्मित महिषासुर मर्दिनी** की मृण्मूर्ति प्राप्त हुई है ।
- इसके अतिरिक्त यहाँ से मोदक रूप में गणेश का अंकन, फणधारी नाग का अंकन, कमल धारण की एक लक्ष्मी की खड़ी प्रतिमा प्राप्त हुई है ।
- वर्तमान में नगर सभ्यता को **'खेड़ा सभ्यता'** के नाम से जाना जाता है । नगर के उत्खनन से **6000** मालव सिक्के मिले हैं ।

15. भीनमाल (जालौर) :

- यहाँ पर उत्खनन कार्य **1953-54 में रतनचंद्र अग्रवाल** के निर्देशन में किया गया ।
- यहाँ के मृदपात्रों पर विदेशी प्रभाव दिखाई देता है ।
- यहाँ की खुदाई से मृदभाण्ड तथा शकक्षत्रपों के सिक्के प्राप्त हुए हैं ।
- भीनमाल से यूनानी दुहत्थी सुराही भी प्राप्त हुई है।
- यहाँ से रोमन एम्फोरा (सुरापात्र) भी मिला है ।
- यहाँ से ईसा की प्रथम शताब्दी एवं गुप्तकालीन अवशेष प्राप्त हुए हैं ।
- संस्कृत विद्वान **महाकवि माघ** एवं गुप्तकालीन विद्वान ब्रह्मगुप्त का जन्म स्थान भीनमाल ही माना जाता है ।
- चीनी यात्री **ह्वेनसांग ने भी भीनमाल** की यात्रा की ।

- इनके समय क्रांतिकारियों ने धौलपुर दुर्ग पर अधिकार कर इसे लूटा था।
- वर्ष 1930 में प्रथम गोलमेज सम्मेलन में उदयभान सिंह ने हिस्सा लिया था।

राठौड़ वंश एवं मारवाड़ वंश

इस अध्याय में हम राठौड़ वंश का अध्ययन करेंगे पहले हम राठौड़ वंश कि सभी शाखाओं का संक्षिप्त अध्ययन करेंगे । उसके पश्चात् मारवाड़ के राठौड़ वंश का अध्ययन करेंगे ।

राठौड़ वंश की शाखाएँ –

धांधल, भडेल, धूहड़िया, हटडिया, मालावत, गोगादेव, महेचा, राठौड़, बीका, मेडतिया, बीदावत, बाल चांपावत, कांधलोत, उदावत, देवराजोत, गहड़वाल, करमसोत, कुम्पावत, मंडलावत, नरावत आदि ।

मारवाड़ का इतिहास

राठौड़ वंश

राजस्थान के उत्तर-पश्चिम भाग में जिस राजपूत वंश का शासन हुआ उसे राठौड़ वंश कहा गया है । उसे मारवाड़ के नाम से जाना जाता है । मारवाड़ में पहले गुर्जर प्रतिहार वंश का राजा था । प्रतिहार यहाँ से कन्नौज (उत्तरप्रदेश) चले गये । फिर राठौड़ वंश की स्थापना इस भाग में हुई, तथा मारवाड़ की संकटकालीन राजधानी 'शिवाना दुर्ग ' को कहा जाता था ।

शाखा	स्थापना	संस्थापक
1- मारवाड़ (जोधपुर)	1240 ई.	राव सीहा
2. बीकानेर	1465 ई.	राव बीका
किशनगढ़	1609 ई.-	किशनसिंह

हम इस अध्याय में मारवाड़ के राठौड़ वंश का विस्तृत अध्ययन करेंगे ।

उत्पत्ति

- राठौड़ शब्द की उत्पत्ति राष्ट्रकूट शब्द से मानी जाती है ।
- पृथ्वीराजरासो, नैणसी, दयालदास और कर्नल टॉड राठौड़ों को कन्नौज के जयचन्द गहड़वाल का वंशज मानते हैं । ।
- "राठौड़ वंश महाकाव्य में राठौड़ों की उत्पत्ति शिव के शीश पर स्थित चन्द्रमा से बताई है ।
- डॉ. हार्नली ने सर्वप्रथम राठौड़ों को गहड़वालों से भिन्न माना है । इस मत का समर्थन डा. ओझा ने किया है ।
- डॉ. ओझा ने मारवाड़ के राठौड़ों को बदायूँ के राठौड़ों का वंशज माना है ।

मारवाड़ (जोधपुर) के राठौड़ संस्थापक – राव सीहा (1240 – 1273)

- राव सीहा जी राजस्थान में स्वतंत्र राठौड़ राज्य के संस्थापक थे । राव सीहा जी के वीर वंशज अपने शौर्य, वीरता एवं पराक्रम व तलवार के धनी रहे हैं । मारवाड़ में राव सीहा जी द्वारा राठौड़ साम्राज्य का विस्तार करने में उनके वंशजो में राव धुहड़ जी, राजपाल जी, जालन सिंह जी, राव छाड़ा जी, राव तीड़ा जी, खीम करण जी, राव वीरम दे, राव चूँड़ा जी, राव रिड़मल जी, राव जोधा, राव बीका, बीदा, दूदा, कानध्ल, मालदेव का विशेष क्रमबद्ध योगदान रहा है। इनके वंशजों में दुर्गादास व अमर सिंह जैसे इतिहास प्रसिद्ध व्यक्ति हुए । राव सिहा सेतराम जी के आठ पुत्रों में सबसे बड़े थे।

चेतराम सम्राट के, पुत्र अस्ट महावीर !
जिसमें सिहों जेस्ठ सूत, महारथी रणधीर ।

- राव सीहा जी सं. 1268 के लगभग पुष्कर की तीर्थ यात्रा के समय मारवाड़ आये थे उस मारवाड़ की जनता मीणों, मेरों आदि की लूटपाट से पीड़ित थी, राव सिहा के आगमन की सूचना पर पाली नगर के पालीवाल ब्राह्मण अपने मुखिया जसोधर के साथ सीहा जी मिलकर पाली नगर को लूटपाट व अत्याचारों से मुक्त करने की प्रार्थना की । अपनी तीर्थ यात्रा से लौटने के बाद राव सीहा जी ने भाइयों व फलौदी के जगमाल की सहायता से पाली में हो रहे अत्याचारों पर काबू पा लिया एवं वहां शांति व शासन व्यवस्था कायम की, जिससे पाली नगर की व्यापारिक उन्नति होने लगी।

आठों में सीहा बड़ा, देव गरुड़ है साथ ।
बनकर छोडिया कन्नोज में, पाली मारा हाथ ।
पाली के अलावा भीनमाल के शासक के अत्याचारों की जनता की शिकायत पर जनता को अत्याचारों से मुक्त कराया ।
भीनमाल लिधी भडे,सिहे साल बजाय।
दत दीन्हो सत सग्रहियो, ओजस कठे न जाय।

- पाली व भीनमाल में राठौड़ राज्य स्थापित करने के बाद सीहा जी ने खेड़ पर आक्रमण कर विजय कर लिया।
- इसी दौरान शाही सेना ने अचानक पाली पर हमला कर लूटपाट शुरू करदी, हमले की सूचना मिलते ही सीहा जी पाली से 18 किलोमीटर दूर बिठू गावं में शाही सेना के खिलाफ आ डटे, और मुस्लिम सेना को खधेड़ दिया । वि. सं. 1330 कार्तिक कृष्ण द्वादशीं सोमवार को करीब 80 वर्ष की उम्र में सीहा जी का स्वर्गवास हुआ व उनकी सोलंकी रानी पार्वती इनके साथ सती हुई ।
- सीहा जी की रानी (पाटन के शासक जय सिंह सोलंकी की पुत्री) से बड़े पुत्र आसनाथ जी हुए जो पिता के बाद मारवाड़

के शासक बने। राव सिहं जी राजस्थान में राठौड़ राज्य की नींव डालने वाले पहले व्यक्ति थे।

आसनाथ (1273 – 1291 ई.)

- सीहा के बाद आसनाथ राठौड़ों का शासक बना। उसने गूँदोच को केन्द्र बनाया। 1291 ई. में सुल्तान जलालुद्दीन खिलजी के आक्रमण के समय पाली की रक्षा करते हुए आसनाथ 1291 ई. में वीरगति को प्राप्त हुआ।
- आसनाथ के पुत्र धूहड़ ने राठौड़ों की कुलदेवी चक्रेश्वरी नागणेचीद्ध की मूर्ति कर्नाटक से लाकर नगाणा गांव (बाड़मेर) मे स्थापित कराई।
- इनके छोटे भाई का नाम धांधलश् था। ये लोक देवता पाबू जी के पिता थे।

राव चूँड़ा (1383 – 1423)

- राव चूँड़ा विरमदेव का पुत्र था।
- राव चूँड़ा राठौड़ों का प्रथम महत्वपूर्ण शासक माना जाता है। अपने पिता की मृत्यु के समय चूँड़ा छः वर्ष का था। इसलिए उसकी माता ने उसे चाचा मल्लिनाथ के पास भेज दिया। मल्लिनाथ ने चूँड़ा को सालोड़ी गाँव जागीर में दी थी।
- उसने इन्दा शाखा के राजा की पुत्री किशोर कुंवरी (मण्डौर ए जोधपुर) से विवाह किया तथा दहेज में उसे मण्डौर दुर्ग मिला।
- चूँड़ा ने इन्दा परिहारों के साथ मिलकर मण्डौर को मालवा के सूबेदार से छीन लिया तथा मण्डौर को अपनी राजधानी बनाया।
- इस प्रकार इन्दा परिहारों को अपना सहयोगी बनाकर राव चूँड़ा ने मारवाड़ में सामन्त प्रथा की स्थापना की।
- उसने जलाल खाँ खोखर को पराजित कर नागौर पर अधिकार कर लिया था।
- परन्तु जैसलमेर के भाटियों और जांगल प्रदेश के सांखलाओं के नागौर पर आक्रमण के समय 1423 ई. में चूँड़ा मारा गया।
- राव चूँड़ा ने नागौर के पास चूण्डासर कस्बा बसाया।
- उसकी रानी चाँद कँवर ने जोधपुर की चाँद बावड़ी का निर्माण करवाया था।

रावल मल्लिनाथ

राजस्थान के प्रसिद्ध लोक देवता हैं इन्होंने अपनी राजधानी 'मेवानगर' (नाकोड़ा) बनायी। मल्लीनाथ के नाम पर ही मारवाड़ क्षेत्र को मालाणी कहते हैं।

- भाई 'वीरम' (मल्लीनाथ ने अपने बेटे जगमाल को राजा न बनाकर वीरम को राजा बना दिया।)

कान्हा (1423 – 1427)

चूँड़ा ने अपनी मोहिलाणी रानी के प्रभाव में आकर उसके पुत्र कान्हा को अपना उत्तराधिकारी बनाया जबकि रणमल, चूँड़ा का ज्येष्ठ पुत्र था।

- रणमल मेवाड़ के राणा लाखा की शरण में चला गया तथा अपनी बहन हंसाबाई का विवाह लाखा से कर दिया। राणा ने उसे धणला गाँव जागीर में दिया।
- 1427 ई. में रणमल ने राणा मोकल की सहायता से मण्डौर पर अधिकार कर लिया। इस समय कान्हा का उत्तराधिकारी सत्ता मण्डौर का शासक था।
- ऐसा कहा जाता है कि राव कान्हा की मृत्यु 'करणी माता के हाथों हुई थी।

राव रणमल, - (1427 – 1438)

राव रणमल, राव चूँड़ा का ज्येष्ठ पुत्र था जो उन्हें रानी चाँद कँवर से हुआ था।

- परन्तु जब उसे राजा नहीं बनाया गया तो वह नाराज होकर मेवाड़ के राणा लक्ष सिंह (लाखा) की शरण में चला गया।
- राणा लाखा ने रणमल को 'धणला' की जागीर प्रदान की।
- रणमल ने अपनी बहन हंसाबाई का विवाह राणा लाखा से कर दिया। परन्तु उसने एक शर्त रखी जिसके अनुसार हंसाबाई का पुत्र ही मेवाड़ का शासक बने।
- रणमल ने अपने समय में मारवाड़ और मेवाड़ रियासतों पर मजबूत नियंत्रण बना रखा था।
- रणमल ने अपने भाई तथा मारवाड़ के राजा 'कान्हा के साथ युद्ध किया तथा इस युद्ध में रणमल का साथ मेवाड़ के मोकल ने दिया। इस युद्ध में कान्हा मारा गया।
- मेवाड़ी सरदारों ने 1438 ई. में उसकी प्रेयसी भारमली की सहायता से चित्तौड़ में रणमल की हत्या कर दी। ऐसा कहा जाता है कि उसे उसकी प्रेयसी भारमली ने शराब में विष दिया था। इस तरह रणमल का अंत हुआ।

राव जोधा (1438 – 1489)

1. राव 'रणमल' को रानी 'कोडमद' से जो पुत्र हुआ वहीं राव जोधा था।
2. पिता रणमल की हत्या के बाद जोधा ने चित्तौड़ से भागकर बीकानेर के समीप काहुनी गाँव में शरण ली।
3. चूँड़ा के नेतृत्व में मेवाड़ की सेना ने राठौड़ों की राजधानी मण्डौर पर अधिकार कर लिया। 15 वर्ष बाद राव जोधा मण्डौर पर पुनः अधिकार कर पाया।
4. राव जोधा ने 1453 ई. में मण्डौर राज्य को अपने अधीन किया।
5. राव जोधा ने 13 मई 1459 ई. में जोधपुर नगर बसाया।
6. राव जोधा ने 1459 ई. में चिड़ियाटुक पहाड़ी पर मेहरानगढ़ दुर्ग का निर्माण कराया।
7. दुर्ग के निर्माण के राव जोधा ने अपनी राजधानी मण्डौर से जोधपुर स्थानातंरित की।
8. राव जोधा ने लगभग 50 वर्ष तक शासन किया।

अध्याय - 4

स्वतंत्रता आंदोलन (1857 का स्वतंत्रता संग्राम)

क्र.सं.	संधिकर्त्ता राज्य	संधि के समय शासक	संधि की तिथि	अंग्रेज कम्पनी को दी जाने वाली खिराज राशि
1.	करौली	हरबक्षपालसिंह	9 नवम्बर, 1817	खिराज से मुक्त
2.	टोंक	अमीर खाँ	15 नवम्बर, 1817	-
3.	कोटा	उम्मेद सिंह	26 दिसम्बर, 1817	2,44,700 रु.
4.	जोधपुर	मानसिंह	6 जनवरी, 1818	1,08,000 रु.
5.	उदयपुर	भीमसिंह	22 जनवरी, 1818	राज्य की आय का 1/4 भाग
6.	बूँदी	विसनसिंह	10 फरवरी, 1818	80,000 रु.
7.	बीकानेर	सूरतसिंह	21 मार्च, 1818	मराठों को खिराज नहीं देता था, इसलिए खिराज से मुक्त
8.	किशनगढ़	कल्याणसिंह	7 अप्रैल , 1818	खिराज से मुक्त
9.	जयपुर	जगतसिंह	15 अप्रैल , 1818	संधि के प्रथम वर्ष कुछ नहीं, दूसरे वर्ष 4 लाख, चौथे वर्ष 6 लाख, पाँचवें वर्ष 7 लाख, छठें वर्ष 8 लाख फिर 8 लाख निश्चित।
10.	जैसलमेर	मूलराज	2 जनवरी, 1819	मराठों को खिराज नहीं देता था, अतः खिराज से मुक्त।

- सुनहरी कोठी की पहली मंजिल का निर्माण वजीउद्दौला खाँ ने करवाया ।
- इस कोठी की दूसरी मंजिल नवाब मोहम्मद इब्राहीम अली ने 1870 ई. में बनवाई।
- सुनहरी कोठी में बैठकर नवाब धार्मिक व राजनैतिक मामलों की चर्चा किया करते थे।

❖ **मुबारक महल - टोंक**

- यहाँ पर बकरा ईद के अवसर पर ऊँट की कुर्बानी दी जाती थी।
- यह महल ऊँट की कुर्बानी के लिए प्रसिद्ध है।
- इस महल में टोंक रियासत के पहले नवाब अमीरुद्दौला ने 1817 ई. में ऊँट की कुर्बानी शुरू की थी। (वर्तमान में यह बंद है)

❖ **मुबारक महल- जयपुर**

- जयपुर के मध्य जय निवास के पास मुबारक महल का निर्माण माधोसिंह द्वितीय के द्वारा 1900 ई. में करवाया गया।
- अतिथि सेवा के लिए इसका निर्माण किया गया था।
- मुबारक महल मुगल, राजपूत , यूरोपीय शैली पर आधारित है।

❖ **चन्द्रमहल- जयपुर**

- जयपुर के सात मंजिले चन्द्रमहल का निर्माण विद्याधर के द्वारा किया गया।
- चन्द्रमहल की साज - सज्जा मानसिंह द्वितीय ने जर्मन कलाकार ए.एच. मूलर से करवाई थी ।
- चन्द्रमहल की दूसरी मंजिल को सुख निवास कहते है। सवाई जयसिंह की रानी सुख कुंवर के नाम पर इसका नाम रखा गया है।
- चन्द्रमहल की तीसरी मंजिल को रंग मंदिर कहा जाता है।
- महल की चौथी मंजिल को शोभा निवास , पाँचवीं मंजिल को छवी निवास , छठी मंजिल को श्री निवास तथा सातवीं मंजिल को मुकुट मंदिर कहा जाता है।
- चन्द्रमहल के पास ही प्रीतम निवास तथा माधोनिवास सुन्दर महल हैं।
- चन्द्रमहल के पास जयनिवास उद्यान बना हुआ है।

अध्याय – 2
चित्रकला

राजस्थानी चित्रकला का नामकरण

- गांगुली व हैवल - राजपूत चित्रकला
- एन. सी . मेहता - हिंदु चित्रशैली
- रामकृष्णदास - राजस्थानी चित्रकला
- कपड़े पर मोम की परत चढ़ाकर चित्र बनाना वार्तिक कहलाता है।
- गोबर से बनाया गया पूजा स्थल साझी कहलाता है।
- अलंकृत करके बनाना मांडणा कहलाता है।
- लकड़ी पर किया जाने वाला चित्रण कावड़ कहलाता है।
- कागज पर बने विभिन्न देवी - देवताओं के चित्रण पाने कहलाते हैं।

❖ भौगोलिक और सांस्कृतिक आधार पर राजस्थानी चित्रकला को चार प्रमुख स्कूलों / शैलियों में बांटा गया है-

मेवाड़ स्कूल	मारवाड़ स्कूल	ढूंढाड़ स्कूल	हाड़ौती स्कूल
उदयपुर, नाथद्वारा, चावण्ड, देवगढ़	जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर, किशनगढ़, नागौर, अजमेर	आमेर, जयपुर, शेखावाटी, अलवर, करौली, उणियारा	बूँदी, कोटा, झालावाड़

INFUSION NOTES
ONLY THE BEST WILL DO

आँखों की बनावट	**चित्र शैली**
तिरछी व चकोर के समान आँखे	नाथद्वारा शैली
मृग के समान आँखे	बीकानेर, कोटा शैली
बादाम के समान आँखे	जोधपुर शैली
मछली के समान आँखे	मेवाड़ शैली
कमल व खंजन के समान आँखे	किशनगढ़ शैली
बड़ी व मछली के समान आँखे	जयपुर, अलवर शैली

नारी सौंदर्य

- राजस्थानी चित्रकला शैली में नारी सुन्दरता की खान है।
- चित्रकला शैली में भारतीय नारी के आदर्श **सौंदर्य** की उसमें पूरी छटा है।
- राजस्थान चित्रकला ने भारतीय नारी के **सौंदर्य** को उभारने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। नायिकाओं के आभूषण, अंग प्रत्यंग, नासिका और नेत्रों के अंकन अत्यन्त कलापूर्ण चित्रित हुए हैं।

वृक्ष	**चित्रशैली**
कदम्ब	उदयपुर (मेवाड़) शैली
केला	किशनगढ़(नाथद्वारा) शैली
खजूर	कोटा, बूंदी शैली
पीपल	अलवर, जयपुर शैली
आम	जोधपुर, बीकानेर शैली

पशुपक्षी	**चित्रशैली**
कौआ, चील, ऊँट, घोड़े	जोधपुर, बीकानेर शैली
हाथी व चकोर	उदयपुर शैली
गाय	नाथद्वारा शैली
मोर व घोड़ा	जयपुर,अलवर शैली

शैली	**रंग**
मारवाड़, देवगढ़, बीकानेर	पीला
नाथद्वारा	पीला-हरा
अजमेर	पीला-लाल-हरा-बेंगनी
किशनगढ़	श्वेत, गुलाबी
मेवाड़	पीला-लाल
कोटा	पीला-हरा-नीला
बूंदी	हरा
जयपुर	केसरिया, हरा, लाल

ललित कला के विकास से संबंधित प्रमुख संस्थाएं

❖ **ललित कला अकादमी -जयपुर**

- स्थापना 24 नवम्बर, 1957
- इस अकादमी का प्रमुख कार्य कलात्मक गतिविधियों का संचालन करना, कला प्रदर्शिनियों का आयोजन तथा कलाकारों को फैलोशिप प्रदान करना होता है
- राजस्थान की दृश्य तथा शिल्प कला की प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन।
- राज्य में सांस्कृतिक एकता स्थापित करना।

चित्रकला के विकास हेतु कार्यरत संस्थाएं	
संस्था	**स्थान**
चितेरा	जोधपुर
धोरां	जोधपुर
तूलिका कलाकार परिषद	उदयपुर
टखमण -28	उदयपुर
कलावृत	जयपुर
पेंग	जयपुर
आयाम	जयपुर
क्रिएटिव आर्टिस्ट ग्रुप	जयपुर
अंकन	भीलवाड़ा

❖ **राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट एण्ड क्राफ्ट्स- जयपुर**

- स्थापना -1857
- जयपुर महाराजा सवाई रामसिंह द्वितीय द्वारा स्थापित किया गया तब इसका नाम मदरसा-हुनरी था।
- स्वतंत्रता के बाद इसका नाम राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट एण्डक्राफ्ट्स हो गया ।
- वर्तमान में मूर्तिकला तथा चित्रकला से संबंधित डिप्लोमा करवाया जाता है।

❖ **जवाहर कला केन्द्र-जयपुर**

- स्थापना 8 अप्रैल, 1993
- इसके वास्तुकार चार्ल्स कोरिया थे।
- उद्घाटन -शंकर दयाल शर्मा (तत्कालीन राष्ट्रपति)
- राजस्थान की समृद्ध कला परम्परा के संवर्धन, लोक मानस में बिखरी सांस्कृतिक विरासत एवं मरुधरा की अनमोल धरोहर के संरक्षण हेतु ।

मुख्य तथ्य-

❖ **रामगोपाल विजयवर्गीय**

- जन्म-1905, बालेर (सवाई माधोपुर)।
- परम्परा वादी चित्रकार।
- सर्वाधिक प्रिय विषय नारी चित्रण।
- राजस्थान में एकल चित्रण प्रदर्शनी प्रारम्भ करने का श्रेय।
- राजस्थान स्कूल आर्ट के प्राचार्य रह चुके।
- राजस्थान के प्रथम चित्रकार जिन्हें वर्ष 1984 को पद्मश्री दिया गया था।

❖ **भूरसिंह शेखावत** (गाँव का चितेरा)

- जन्म-1914 धोंधलिया ग्राम (बीकानेर)।

अध्याय – 6
मेले एवं त्यौहार

राजस्थान के प्रमुख मेले

अजमेर के मेले

- **पुष्कर मेला** - यह मेला पुष्कर (अजमेर) में कार्तिक शुक्ल एकादशी से पूर्णिमा तक भरता है। यह राजस्थान का सबसे बड़ा सांस्कृतिक मेला/ सबसे बड़ा रंगीन/रंग बिरंगा / सर्वाधिक विदेशी पर्यटकों का आगमन वाला मेला है। ख्वाजा साहब का उर्स - यह उर्स अजमेर में रज्जब माह की । से 6 तारीख तक भरता है। अढ़ाई दिन के झोपड़े में ।
- **कल्पवृक्ष मेला** - यह मेला मांगलियावास (अजमेर) में श्रावण मास की हरयाली अमावस्या को भरता है।
- **कार्तिक पशु मेला** - यह पशु मेला पुष्कर (अजमेर) में कार्तिक शुक्ल 8 से मार्गशीर्ष 2 तक भरता है।

अलवर के मेले

- **चंद्र प्रभु मेला** - यह मेला तिजारा, अलवर में फाल्गुन शुक्ला सप्तमी व श्रावण शुक्ला दशमी को भरता है।
- **नारायणी माता का मेला** - यह मेला बरवा डूंगरी सरिस्का (अलवर) में वैशाख शुक्ल एकादशी को भरता है।

  हनुमानजी का मेला - यह मेला पांडुपोल (अलवर) में भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी एवं पंचमी को भरता है।
- **भृर्तहरि मेला** - यह मेला भृर्तहरि (महान योगी भृर्तहरि की तपो भूमि) पर अलवर में भाद्रपद शुक्ला अष्टमी को भरता है। यह कनफटे नाथों की तीर्थस्थली है ।
- **बिलारी माता मेला** - बिलारी माता का यह मेला बिलारी (अलवर) में चैत्र शुक्ला अष्टमी को भरता है।

बाड़मेर के मेले

- **रणछोड़राय का मेला** - यह मेला बाड़मेर जिले के खेड़ क्षेत्र में प्रतिवर्ष राधाष्टमी, माघ पूर्णिमा, बैशाख एवं श्रावण मास की पूर्णिमा व कार्तिक पूर्णिमा भादवा सुदी चतुर्दशी को भरता है।
- **मल्लीनाथ पशु मेला** - यह मेला बाड़मेर जिले के तिलवाड़ा क्षेत्र में चैत्र कृष्णा एकादशी से चैत्र शुक्ला एकादशी तक भरता है।
- **हल्देश्वर महादेव शिवरात्रि मेला** - यह मेला बाड़मेर जिले के पीपलूद (छप्पन की पहाड़ियों के बीच यह मारवाड़ का लघु माउन्ट आबू है।) में शिवरात्रि के अवसर पर भरता है।
- **रानी भटियाणी का मेला** - यह मेला बाड़मेर जिले के जसोल क्षेत्र में कार्तिक वदी पंचमी को भरता है।
- **नाकोड़ाजी का मेला** - यह मेला बाड़मेर जिले के नाकोड़ा तीर्थ मेवानगर में पोष कृष्ण दशमी को भरता है।
- **बजरंग पशु मेला** - यह मेला बाड़मेर जिले के सिणधरी क्षेत्र में मंगसर वदी तृतीया को भरता है।

बीकानेर जिले के मेले

- **निर्जला ग्यारस मेला** - यह मेला बीकानेर जिले के लक्ष्मीनाथ मंदिर में ज्येष्ठ सुदी एकादशी को भरता है।
- **जम्भेश्वर मेला** - यह मेला बीकानेर जिले के मुकाम-तालवा (नोखा) में वर्ष में दो बार - फाल्गुन व आश्विन अमावस्या को भरता है।
- **नागणेची माता का मेला** - यह मेला बीकानेर जिले में नवरात्रा के अवसर पर भरता है।
- **चनणी चेरी मेला (सेवकों का मेला)** - यह मेला बीकानेर जिले के देशनोक में फाल्गुन शुक्ल सप्तमी को भरता है।
- **कपिल मुनि का मेला** - यह मेला बीकानेर जिले के श्री कोलायत जी में कार्तिक पूर्णिमा को भरता है।
- **करणी माता का मेला** - यह मेला देशनोक (बीकानेर) में नवरात्रा (कार्तिक एवं चैत्र माह में) में भरता है।

बांसवाड़ा जिले के प्रमुख मेले

- **घोटिया अम्बा मेला** - यह मेला बांसवाड़ा जिले के घोटिया (बारीगामा) नामक स्थान पर चैत्र अमावस्या को (जिले का सबसे बड़ा ग्रामीण मेला) भरता है।
- **कल्लाजी का मेला** - यह मेला बांसवाड़ा जिले के गोपीनाथ का गढ़ा नामक स्थान पर आश्विन सुदी नवरात्रि प्रथम रविवार को भरता है।
- **अंदेश्वर मेला** - यह मेला बांसवाड़ा जिले के अंदेश्वर में कार्तिक पूर्णिमा को भरता है।
- **गोपेश्वर मेला** - यह मेला बांसवाड़ा जिले के घाटोल के निकट कार्तिक पूर्णिमा को भरता है।
- **मानगढ़ धाम मेला (आदिवासियों का मेला)** - यह मेला बांसवाड़ा के आनंदपुरी के निकट मानगढ़ धाम में मार्गशीर्ष पूर्णिमा को भरता है।

चूरू जिले के मेले

- **भभूता सिद्ध का मेला** - यह मेला चूरू जिले के चंगोई (तारानगर) में भादवा सुदी सप्तमी को भरता है।
- **गोगा जी का मेला** - यह मेला चूरू जिले के दद्रेवा गांव में भाद्रपद कृष्णा नवमी (गोगानवमी) को भरता है।

- ***सालासर बालाजी का मेला*** - *यह मेला चूरू जिले के सालासर (सुजानगढ़) में चैत्र व कार्तिक पूर्णिमा को भरता है।*

बारां जिले के मेले

- ***सीताबाड़ी का मेला (धार्मिक व पशु मेला)*** - *यह मेला बारां जिले के सीताबाड़ी, केलवाड़ा (सहरिया जनजाति का कुम्भ) नामक स्थान पर ज्येष्ठ अमावस्या (इस मेले में सहरियाओं का स्वयंवर होता है) को भरता है।*
- ***डोल मेला*** - *यह मेला बारां जिले के डोल तालाब पर जलझूलनी एकादशी (भाद्रपद शुक्ला एकादशी) को भरता है। इसमें देवविमानों सहित शोभायात्रा निकलती है।*
- ***ब्रह्माणी माता का मेला*** - *यह मेला बारां जिले के सोरसन में भरता है। यहां पर गधों का मेला भी लगता है।*
- ***फूलडोल शोभा यात्रा महोत्सव (श्रीजी का मेला)*** - *यह मेला बारां जिले के किशनगंज में होली (फाल्गुन मास की पूर्णिमा) के दिन भरता है।*
- ***कपिल धारा का मेला*** - *यह मेला सहरिया क्षेत्र (बारां) में कार्तिक पूर्णिमा को भरता है।*

भरतपुर के मेले

- ***गंगा दशहरा मेला*** - *यह मेला भरतपुर जिले के कामां क्षेत्र में ज्येष्ठ शुक्ल सप्तमी से द्वारदशी तक भरता है।*
- ***बसंती पशु मेला*** – *यह मेला माघ अमावस्या से शुक्ल पंचमी तक भरता है ।*
- ***गरुड़ मेला*** - *यह मेला भरतपुर जिले के बंशी पहाड़पुर में कार्तिक शुक्ल तृतीया को भरता है।*
- ***भोजन बारी/भोजन थाली परिक्रमा*** – *भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा को कामा में भरता है ।*
- ***जसवंत पशु मेला*** - *यह मेला भरतपुर जिले में अश्विन शुक्ल पंचमी से पूर्णिमा तक भरता है।*
- ***बृज महोत्सव*** – *यह मेला द्वादशी से माघ शुक्ल – डीग भरतपुर में भरता है ।*

जयपुर के मेले

- ***गणगौर मेला*** - *गणगौर मेला जयपुर में चैत्र शुक्ला तीज व चौथ को भरता है।*
- ***बाणगंगा मेला*** - *यह विराटनगर, जयपुर में वैशाख पूर्णिमा को भरता है।*
- ***शीतलामाता का मेला*** - *यह मेला चाकसू, जयपुर में चैत्र कृष्ण अष्टमी को भरता है।*
- ***गधों का मेला*** - *आश्विन कृष्ण सप्तमी से आश्विन कृष्ण एकदशी तक लुनियावास (सांगानेर) गांव में भरता है।*
- ***तीज की सवारी एवं मेला*** - *यह जयपुर में श्रावण शुक्ला तृतीया को आयोजित होता है।*

भीलवाड़ा के मेले

- ***सवाई भोज का मेला*** - *यह मेला भीलवाड़ा जिले के आसींद में सवाई भोज स्थान पर भाद्रपद शुक्ल अष्टमी को भरता है।*
- ***फूलडोल का मेला (रामस्नेही सम्प्रदाय)*** - *यह मेला भीलवाड़ा जिले के रामनिवास धाम (रामद्वारा) में चैत्र कृष्णा प्रतिपदा से पंचमी तक भरता है।*
- ***तिलस्वां महादेव मेला*** - *यह मेला भीलवाड़ा जिले के तिलस्वां (मांडलगढ़) में शिवरात्रि फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी के अवसर पर भरता है।*
- ***सौंरत (त्रिवेणी) का मेला*** - *यह मेला भीलवाड़ा जिले के त्रिवेणी संगम सौंरत(मेनाल, मांडलगढ़) में शिवरात्रि के पर्व पर आयोजित होता है।*
- ***धनोप माता का मेला*** - *यह मेला भीलवाड़ा जिले के धनोप गांव (खारी व मानसी नदी के बीच स्थित) में चैत्र शुक्ल एकम से दशमी तक भरता है।*

जोधपुर के मेले

- ***नाग पंचमी का मेला*** - *यह मेला मंडोर (जोधपुर) में भाद्रपद शुक्ल पंचमी को भरता है।*
- ***धींगागवर बेतमार मेला*** - *यह मेला जोधपुर में वैशाख कृष्ण तृतीया को भरता है।*
- ***खेजड़ी वृक्ष मेला*** - *यह मेला जोधपुर के खेजड़ली में भादवा शुक्ला दशमी को आयोजित होता है।*
- ***पाबूजी का मेला*** - *कोलू गांव (फलोदी, जोधपुर) में चैत्र अमावस्या को भरता है।*
- ***वीरपुरी का मेला*** - *यह मेला मंडोर (जोधपुर) में श्रावण मास के अंतिम सोमवार को भरता है।*
- ***बाबा रामदेव जी का मेला*** - *बाबा रामदेव जी का यह मेला मसूरिया (जोधपुर) में भादवा सुदी दूज को भरता है।*
- ***चामुंडा माता का मेला*** - *इनके मंदिर में आश्विन शुक्ल नवमी को जोधपुर दुर्ग में एक प्रसिद्ध मेला लगता है।*

सिरोही के मेले

- ***सारणेश्वर जी का मेला*** - *यह मेला सिरोही में भादवा सुदी 11 एवं 12 को भरता है।*
- ***गौतम ऋषि महादेव मेला*** - *यह मेला सिरोही जिले के चांदीला में अप्रैल माह में भरता है।*

- ***गणगौर***

- इस त्यौहार में सुहागन स्त्रियाँ शिव-पार्वती की पूजा करती हैं।
- गणगौर में 'गण' महादेव का व गौरी पार्वती का प्रतीक है।
- इस दिन कुँवारी कन्याएँ मनपसंद वर प्राप्ति की तथा विवाहित स्त्रियाँ अपने अखंड सौभाग्य की कामना करती हैं।
- गणगौर का त्यौहार पार्वती के "गौनें" का सूचक है।
- गणगौर का त्यौहार लगभग 18 दिन तक (चैत्र कृष्ण एकम से शुरू होकर चैत्र शुक्ल तृतीया) चलता है।
- इन दिनों सर्वाधिक घूमर नृत्य किया जाता है।
- जयपुर की गणगौर प्रसिद्ध है।
- धींगा गणगौर एवं बेंतमार मेला जोधपुर में लगता है।
- उदयपुर के महाराणा राजसिंह प्रथम ने अपनी छोटी महारानी को प्रसन्न करने के लिए रीति के विरुद्ध जबरदस्ती वैशाख कृष्ण तृतीया को गणगौर मनाने का प्रचलन प्रारंभ किया था जिससे इसका नाम धींगा गणगौर प्रसिद्ध हुआ।
- बिना ईसर की गणगौर जैसलमेर में पूजी जाती है।
- राजस्थान में नाथद्वारा क्षेत्र में चैत्र शुक्ल पंचमी को गुलाबी गणगौर मनाई जाती है ।

- ***शीतला अष्टमी***

- यह त्यौहार चैत्र कृष्ण अष्टमी को मनाया जाता है।
- इस दिन शीतला माता को ठंडा भोग चढ़ाया जाता है एवं शीतला माता की पूजा की जाती है और व्रत भी रखा जाता है।
- समस्त भोजन सप्तमी की संध्या को बनाकर रखा जाता है।
- इस दिन बासी खाना खाया जाता है जिससे इसे 'बास्योड़ा' कहा जाता है ।
- बच्चो के चेचक निकलने पर शीतला माता की पूजा की जाता है।
- इसलिए शीतला माता को बच्चों की संरक्षिका भी कहा जाता है।
- शीतला माता का मंदिर चाकसू-जयपुर में है ।
- मंदिर का निर्माण माधोसिंह द्वितीय द्वारा करवाया गया।
- शीतला माता का वाहन गधा होता है , माता के पुजारी ***कुम्हार*** जाती के लोग होते हैं।

- ***घुड़ला का त्यौहार***

- यह त्यौहार जोधपुर, बाड़मेर, जैसलमेर आदि जिलो में चैत्र कृष्ण अष्टमी से शुरू होकर चैत्र शुक्ल तृतीया तक चलता है।

घुड़ला त्यौहार का आरम्भ

कोसाणा गांव में लगभग 200 कुंवारी कन्याएँ गणगौर पर्व की पूजा कर रही थी । घुडला खान मुसलमान सरदार अपनी फ़ौज के साथ निकल रहा था, उसने सभी बच्चियों का अपहरण कर लिया, इसकी सूचना गाँव के कुछ घुड़सवारों ने जोधपुर के राव सातल सिंह राठौड़ जी को दी। राजपुतो की तलवारों ने भागती मुग़ल सेना का पीछा कर ख़ात्मा कर दिया । राव सातल सिंह जी ने तलवार के भरपुर वार से एक ही झटके में दुष्ट घुडला खान का सिर धड़ से अलग कर दिया। राव सातल सिंह ने सभी बच्चियों को मुक्त करवाकर उनके सतीत्व की रक्षा की। गांव वालों ने उस दुष्ट घुडला खान का कटा हुआ सिर बच्चियों को सोंप दिया। बच्चियो ने घुडला खान के सिर को घड़े पर रख कर उस घड़े में जितने घाव घुडला खान के शरीर पर हुये, उतने छेद किये और फिर पुरे गाँव में घुमाया एवं हर घर में रोशनी की गयी। तभी से घुडला त्यौहार मनाया जाता हैं।

- ***नववर्ष***

- यह चैत्र शुक्ल एकम को मनाया जाता है।
- इस दिन हिन्दुओं का नया वर्ष शुरू होता है।
- हिंदी पंचांग में इस तिथि का बहुत अधिक महत्व है।

- ***वसन्तीय नवरात्र***

- यह नवरात्र चैत्र शुक्ल एकम से नवमी तक चलते हैं।
- इसमें इन नौं दिनों में माँ दुर्गा की पूजा की जाती है।

- ***अरुंधति व्रत***

6. निम्नलिखित में से कौनसी शक्ति राज्यपाल के पास नहीं है ?

A. स्वविवेकीय
B. वीटो पॉवर
C. अध्यादेश जारी करना
D. परामर्शकारी शक्ति

उत्तर (D)

7. निम्नलिखित में से राज्यपाल के संबंध में कौनसा कथन सही है ?

A. राज्यपाल राज्य सरकार का कार्यकारी / संवैधानिक प्रमुख होता है ।
B. उसमें लोकसभा का सदस्य होने की योग्यता होनी चाहिए ।
C. उसे जन्म से भारत का नागरिक होना चाहिए ।
D. उसकी आयु अधिकतम 35 वर्ष होनी चाहिए ।

उत्तर (A)

8. राजस्थान में आखिरी बार जब राष्ट्रपति शासन किस राज्यपाल के समय लगाया गया था ?

A. जोगिंदरसिंह
B. रघुकुल तिलक
C. एम चेना रेड्डी
D. हुकुमसिंह

उत्तर (C)

9. राजस्थान के राज्यपाल के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए तथा कौन सा कथन असत्य है ?

A. वह राजस्थान केन्द्रीय विश्वविद्यालय के कुलाधिपति हैं ।
B. वह 'राजस्थान रेडक्रास सोसायटी' के अध्यक्ष होते हैं ।
C. वह राज्य सैनिक बोर्ड के अध्यक्ष होते हैं ।
D. उपर्युक्त सभी

उत्तर (A)

10. राजस्थान के निम्नांकित राज्यपालों में से कौनसे लोकसभा अध्यक्ष भी रहे ?

A. बलिराम भगत
B. प्रतिभा पाटिल
C. रघुकुल तिलक
D. मदनलाल खुराना

उत्तर (A)

अध्याय – 2
मुख्यमंत्री और मंत्रिपरिषद्

- मुख्यमंत्री किसी राज्य की कार्यपालिका का वास्तविक प्रधान होता है । वह राज्य विधानसभा का नेता होता है । राज्य की सर्वोच्च कार्यपालिका शक्ति मुख्यमंत्री के हाथों में है । वह राज्य का वास्तविक शासक/तथ्यत प्रमुख / डी-फैक्टो हेड होता है ।
- मुख्यमंत्री की नियुक्ति राज्यपाल के द्वारा संविधान के **अनुच्छेद 164 (1)** के तहत की जाती है ।
- सामान्यत , राज्यपाल बहुमत प्राप्त दल के नेता को मुख्यमंत्री नियुक्त करता है । लेकिन यदि चुनावों में किसी भी दल को स्पष्ट बहुमत प्राप्त नहीं हुआ है , उस स्थिति में राज्यपाल स्वविवेक से मुख्यमंत्री नियुक्त करता है। उसे एक माह के भीतर सदन में विश्वास मत प्राप्त करने के लिए कहता है । राज्यपाल स्वविवेक द्वारा मुख्यमंत्री की नियुक्ति ऐसे समय पर करता है जब कार्यकाल के दौरान किसी मुख्यमंत्री की मृत्यु हो जाए और कोई उत्तराधिकारी तय नहीं हो या चुनावों में किसी दल को स्पष्ट बहुमत प्राप्त नहीं हुआ हो ।

NOTE- केन्द्र शासित प्रदेशों में (जहाँ विधानसभा है) मुख्यमंत्रियों की नियुक्ति , राष्ट्रपति करता है । वर्तमान में भारत के तीन केन्द्र शासित प्रदेशों क्रमशः पुदुच्चेरी, दिल्ली और जम्मू- कश्मीर में विधानसभाओं का प्रावधान है ।

- **अनुच्छेद 164 (3)** मुख्यमंत्री व मंत्रियों को शपथ राज्यपाल दिलाता है । राज्य का मुख्यमंत्री कार्यग्रहण से पूर्व राज्यपाल के समक्ष पद व गोपनीयता की शपथ ग्रहण करता है। मुख्यमंत्री व मंत्रियों की शपथ का प्रारूप **भारतीय संविधान की अनुसूची 3** में मिलता है ।

अनुच्छेद 164 (4) मुख्यमंत्री एवं मंत्रियों की योग्यता भारतीय संविधान में मुख्यमंत्री पद के लिए योग्यताएँ आवश्यक है जो एक मंत्री पद के लिए होती है । जैसे– (1) न्यूनतम आयु 25 वर्ष हो । (2) राज्य विधानमण्डल के दोनों में से किसी एक सदन का सदस्य हो ।

NOTE- यदि मुख्यमंत्री विधानमण्डल के किसी भी सदन का सदस्य न भी हो तो 6 माह तक मुख्यमंत्री रह सकता है । 6 माह के भीतर उसे विधानमण्डल के किसी एक सदन की सदस्यता ग्रहण करनी पड़ती है अन्यथा त्यागपत्र देना पड़ता है । मुख्यमंत्री सामान्यतः विधानमण्डल के निम्न सदन (विधान सभा) का सदस्य होता है, लेकिन उच्च सदन (विधान परिषद) के सदस्य को भी मुख्यमंत्री बनाया जा सकता है यदि उस राज्य में द्विसदनात्मक विधान मण्डल है तो ।

NOTE- यदि मुख्यमंत्री विधानपरिषद का सदस्य है तो वह
(i) राष्ट्रपति के चुनाव में भाग नहीं ले सकता।

(ii) वह अविश्वास प्रस्ताव पर वोट नहीं कर सकता है क्योंकि अविश्वास प्रस्ताव विधानसभा में लाया जाता है ।

- **अनुच्छेद 164 (5)** मुख्यमंत्री के वेतन एवं भत्तों व कार्यकाल

मुख्यमंत्री के वेतन एवं भत्तों का निर्धारण राज्य विधानमण्डल द्वारा किया जाता है । वर्तमान में राजस्थान के मुख्यमंत्री को 75,000 रु प्रतिमाह वेतन मिलता है । (1 अप्रेल , 2019 के बाद) स्मरणीय तथ्य : मुख्यमंत्री का कार्यकाल 5 वर्ष होता है , परन्तु वह राज्यपाल के प्रसादपर्यंत अपने पद पर बना रहता है । अर्थात जब तक कि उसका विधानसभा में बहुमत है । लेकिन यदि मुख्यमंत्री विधानसभा में अपना बहुमत खो देता है तो उसे त्यागपत्र दे देना चाहिए अन्यथा राज्यपाल उसे बर्खास्त कर सकता है । मुख्यमंत्री अपना त्यागपत्र राज्यपाल को देता है । और मुख्यमंत्री का त्यागपत्र समस्त मंत्रिपरिषद् का त्यागपत्र माना जाता है ।

अनुच्छेद 164 (2) - राज्य की मंत्रिपरिषद् सामूहिक रूप से विधानसभा के प्रति उत्तरदायी होती है ।

मुख्यमंत्री के कार्य एवं शक्तियाँ

मंत्रिपरिषद् के संबंध में

- मुख्यमंत्री की सलाह से राज्यपाल द्वारा मंत्रियों की नियुक्ति की जाती है ।
- मुख्यमंत्री , मंत्रियों के मध्य विभागों का बंटवारा करता है और उनमें फेरबदल भी करता है । मतभेद होने पर वह किसी भी मंत्री को त्यागपत्र देने के लिए कह सकता है या राज्यपाल को उसे बर्खास्त करने का परामर्श दे सकता है।
- मुख्यमंत्री, मंत्रिपरिषद् एवं मंत्रिमण्डल की बैठकों की अध्यक्षता करता है ।

NOTE- मुख्यमंत्री की अनुपस्थिति में सबसे वरिष्ठ मंत्री मंत्रिमण्डल की अध्यक्षता करता है ।

- वह सभी मंत्रियों को उनके कार्यों में परामर्श देता है तथा उनके कार्यों पर नियंत्रण भी रखता है ।
- मुख्यमंत्री , राज्यपाल और मंत्रिपरिषद् के बीच की कड़ी के रूप में कार्य करता है ।

अनुच्छेद 164 (1) क - इस अनुच्छेद को 91 वें संविधान संशोधन 2003 द्वारा जोड़ा गया । इसमें राज्य मंत्रिपरिषद् का आकार निश्चित किया गया। राज्य मंत्रिपरिषद् में मुख्यमंत्री सहित अधिकतम मंत्री उस राज्य की कुल विधानसभा सीटों का 15 % तथा मुख्यमंत्री सहित न्यूनतम मंत्री 12 होंगे ।

राज्यपाल के संदर्भ में

अनुच्छेद 167- इसमें मुख्यमंत्री के संवैधानिक कर्त्तव्यों का उल्लेख मिलता है ।

(i) वह मंत्रिपरिषद् द्वारा राज्य के प्रशासन से संबंधित मामलों के लिए सभी निर्णयों तथा विधायन के प्रस्तावों के बारे में राज्यपाल को सूचित करें।

(ii) राज्यपाल द्वारा राज्य के प्रशासन से संबंधित मामलों अथवा विधायन प्रस्तावों के बारे में माँगे जाने पर सूचना प्रदान करना।

(iii) यदि राज्यपाल चाहे तो मंत्रिपरिषद् के समक्ष किसी ऐसे मामले को विचारार्थ रखे जिस पर निर्णय तो किसी मंत्री द्वारा लिया जाना है लेकिन जिस पर मंत्रिपरिषद् विचार नहीं किया है ।

NOTE- राज्य की प्रमुख संवैधानिक संस्था जैसेः- राज्य के महाधिवक्ता (अनुच्छेद-165), राज्य वित्त आयोग के अध्यक्ष व सदस्यों (अनुच्छेद 243 I- पंचायतीराज, अनुच्छेद 243 Y- नगर निकायों के लिए) तथा राज्य लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष व सदस्यों (अनुच्छेद-316) राज्य निर्वाचन आयुक्त (अनुच्छेद 243 K-पंचायतीराज व अनुच्छेद 243 ZA- नगर निकायों के लिए) की नियुक्ति राज्यपाल द्वारा मंत्रिपरिषद की सलाह (विशेषतया मुख्यमंत्री) की जाती है।

NOTE-राज्य के प्रमुख सांविधिक/ वैधानिक निकायों जैसेः- राजस्थान मानवाधिकार आयोग, राजस्थान सुचना आयोग के अध्यक्षों व सदस्यों तथा लोकायुक्त संस्था के अध्यक्ष की नियुक्ति राज्यपाल द्वारा एक चयन समिति की सिफारिश पर की जाती है जिसका अध्यक्ष मुख्यमंत्री होता।

NOTE-राजस्थान महिला आयोग के अध्यक्ष व सदस्यों की नियुक्ति राज्य सरकार (मुख्यमंत्री) द्वारा की जाती है।

राज्य विधानमण्डल के संबंध में

- मुख्यमंत्री , राज्यपाल को किसी भी समय विधानसभा विघटित करने की सिफारिश कर सकता है ।
- मुख्यमंत्री ही राज्य विधानसभा के पटल पर सरकार की नीतियों की घोषणा करता है ।
- मुख्यमंत्री , राज्यपाल को सत्राहूत व सत्रावसान के संबंध में सलाह देता है ।

मुख्यमंत्री के अन्य कार्य

- राज्य आयोजना बोर्ड के अध्यक्ष होते है ।
- अंतर्राज्यीय परिषद (अनुच्छेद 263) के सदस्य होते है।
- राष्ट्रीय विकास परिषद के सदस्य होते है ।
- नीति आयोग के सदस्य होते है ।
- वह संबंधित क्षेत्रीय परिषदों के क्रमवार उपाध्यक्ष के रूप में कार्य करते है तथा एक समय में इनका कार्यकाल1 वर्ष का होता है ।

हरिदेव जोशी

- बरकतुल्लाखां के निधन के बाद प्रदेश की बागडोर हरिदेव जोशी को सौंपी गई ।
- 11 अक्टूबर, 1973 को उन्होंने राजस्थान के मुख्यमंत्री के तौर पर शपथ ली ।
- 10 मार्च, 1985 को वे दूसरी बार प्रदेश के मुख्यमंत्री बने तथा 4 दिसम्बर, 1989 को वे तीसरी बार राजस्थान के मुख्यमंत्री बने ।
- यह तीन बार राजस्थान के मुख्यमंत्री बने लेकिन एक बार भी अपना कार्यकाल पूरा नहीं कर सके ।
- वर्ष 1952 से मृत्युपर्यंत लगातार 10 बार विधायक बने , लेकिन कभी सांसद नहीं रहे ।
- राजस्थान में दूसरी बार राष्ट्रपति शासन (वर्ष 1977 में) इन्हीं के समय लगा क्योंकि यह बहुमत साबित नहीं कर पाये ।
- इन्हीं के समय वर्ष 1987 में संभागीय व्यवस्था की पुनः शुरुआत हुई ।
- हरिदेव जोशी 1990-92 तक राजस्थान में विपक्ष / प्रतिपक्ष के नेता रहे । यह तीन बार राजस्थान के मुख्यमंत्री व असम , मेघालय , पं . बंगाल के राज्यपाल भी रहे ।

जगन्नाथ पहाड़िया

- जून, 1980 में हुए सातवीं विधानसभा (राजस्थान में पहली बार मध्यावधि चुनाव) के चुनाव में जगन्नाथ पहाड़िया को राजस्थान का मुख्यमंत्री बनने का मौका मिला ।
- उन्होंने 6 जून, 1980 को शपथ ली और 13 जुलाई, 1981 तक पद पर बने रहे ।
- राजस्थान के ऐसे मुख्यमंत्री जिन्हें मुख्यमंत्री नियुक्त किया तब यह राजस्थान विधानसभा के सदस्य नहीं थे ।
- राजस्थान के प्रथम दलित मुख्यमंत्री (अनुसूचित जाति के) बने ।
- ऐसे मुख्यमंत्री जिन्होंने राज्य में पूर्ण शराबबंदी लागू की ।
- लोकसभा व राज्यसभा सांसद भी रहे ।
- यह बिहार तथा हरियाणा के राज्यपाल बने ।

शिवचरण माथुर

- जगन्नाथ पहाड़िया के बाद 14 जुलाई, 1981 को शिवचरण माथुर राजस्थान के मुख्यमंत्री बने और 23 फरवरी, 1985 तक पद पर बने रहे ।
- 20 जनवरी, 1988 को मुख्यमंत्री के तौर पर उन्होंने दूसरी बार शपथ ली और दिसम्बर, 1989 तक मुख्यमंत्री के तौर पर प्रदेश की सेवा की ।
- यह दो बार राजस्थान के मुख्यमंत्री बने तथा असम के राज्यपाल रहे ।
- वर्ष 1989 में डीग गोलीकाण्ड (भरतपुर के महाराजा मानसिंह की मृत्यु) के कारण इस्तीफा देना पड़ा ।

हीरालाल देवपुरा

- हीरालाल देवपुरा 23 फरवरी, 1985 से 10 मार्च, 1985 तक सिर्फ 16 दिनों के लिए राजस्थान के मुख्यमंत्री बने । हीरालाल न्यूनतम कार्यकाल वाले राजस्थान के मुख्यमंत्री बने । राजस्थान के एकमात्र मुख्यमंत्री जो विधानसभा अध्यक्ष भी रहे।
- राजस्थान के एकमात्र मुख्यमंत्री जो राज्य वित्त आयोग (दूसरा) के अध्यक्ष भी बने ।

भैरोसिंह शेखावत

- बाबोसा के नाम से लोकप्रिय भैरोसिंह शेखावत जून, 1977 में राजस्थान के प्रथम गैर - कांग्रेसी मुख्यमंत्री बनें । इस समय यह राजस्थान की विधानसभा के सदस्य ना होकर , राज्यसभा सांसद थे , बाद में कोटा की छबड़ा सीट से उपचुनाव जीतकर विधायक बने ।
- 4 मार्च 1990 को उन्हें दूसरी बार राजस्थान का मुख्यमंत्री बनने का मौका मिला । 15 दिसम्बर, 1992 को अयोध्या प्रकरण के कारण उनकी सरकार को बर्खास्त कर दिया गया ।
- वर्ष 1993 में एक बार फिर उन्होंने प्रदेश के मुख्यमंत्री के तौर पर शपथ ली और । दिसम्बर, 1998 तक इस पद पर अपनी सेवाएं दीं।
- भैरोसिंह शेखावत तीन बार राजस्थान के मुख्यमंत्री रहे ।
- मुख्यमंत्री बनने से पूर्व राज्यसभा सांसद व विधायक भी रहे ।
- राजस्थान के एकमात्र ऐसे मुख्यमंत्री जो उपराष्ट्रपति भी बने ।
- राजस्थान में तीसरा (वर्ष 1980) व चौथा (वर्ष 1992) राष्ट्रपति शासन इन्हीं के समय लगा ।
- यह मुख्यमंत्री बनने से पूर्व किसी मंत्रिपरिषद् में मंत्री नहीं रहे ।
- यह तीन बार राजस्थान विधानसभा में विपक्ष के नेता रहे।

अशोक गहलोत

- 1 दिसम्बर, 1998 को राज्य के मुख्यमंत्री के तौर पर शपथ ली ।
- 13 दिसम्बर, 2008 को उन्हें दूसरी बार राजस्थान का मुख्यमंत्री बनने का अवसर मिला ।
- वर्तमान (वर्ष 2018 से) मुख्यमंत्री अशोक गहलोत पद के अनुसार 22वें तथा व्यक्ति के अनुसार 11वें निर्वाचित मुख्यमंत्री है । यदि मनोनीत को भी शामिल करे तो पद के अनुसार 25वें तथा व्यक्ति के अनुसार 13वें मुख्यमंत्री है ।
- यह वर्तमान में जोधपुर की सरदारपुरा सीट से निर्वाचित हुए है ।
- अशोक गहलोत ऐसे मुख्यमंत्री रहे जिनके कार्यकाल में दो उप-मुख्यमंत्री रहे (1) बनवारी लाल बैरवा (2) कमला बेनीवाल

उपमुख्यमंत्री

यह एक गैर - संवैधानिक पद है । यह एक परम्परा के तौर पर किसी राजनीतिक दल को लाभ पहुँचाने के उद्देश्य से सृजित किया जाता है ।

उपमुख्यमंत्री	**मुख्यमंत्री**	**वर्ष**
टीकाराम पालीवाल	जयनारायण व्यास	1952-1954
हरिशंकर भाभड़ा	भैरोंसिंह शेखावत	1994-1998
बनवारी लाल बैरवा	अशोक गहलोत	2003
कमला बेनीवाल	अशोक गहलोत	2003
सचिन पायलट	अशोक गहलोत	2018

वसुन्धरा राजे

- वसुन्धरा राजे 8 दिसम्बर, 2003 को राजस्थान की प्रथम महिला मुख्यमंत्री बनी ।
- इसके बाद 13 दिसम्बर, 2013 को उन्हें दूसरी बार प्रदेश का मुख्यमंत्री बनने का मौका मिला ।
- यह दो बार राजस्थान की मुख्यमंत्री रही यह पांच बार विधायक व 5 बार लोकसभा सांसद बनी।
- श्रीमती वसुंधरा राजे राजस्थान से सर्वाधिक बार लोकसभा सांसद बनने वाली महिला है ।
- वसुंधरा राजे राजस्थान विधानसभा में विपक्ष की नेता भी रही है।

NOTE- राजस्थान के तीन ऐसे मुख्यमंत्री जो विपक्ष / प्रतिपक्ष के नेता भी रहे :- (1) भैरोंसिंह शेखावत (तीन बार) (2) हरिदेव जोशी (एक बार) (3) वसुंधरा राजे (एक बार)

राजस्थान के मुख्यमंत्री

क्र.	मुख्यमंत्री	कार्यकाल
1.	श्री हीरालाल शास्त्री	07.04.1949 - 05.01.1951
2.	श्री सी.एस. वेंकटाचार्य	06.01.1951 - 25.04.1951
3.	श्री जयनारायण व्यास	26.04.1951 - 03.03.1952
4.	श्री टीकाराम पालीवाल	03.03.1952 - 31.10.1952
5.	श्री जयनारायण व्यास	01.11.1952 - 12.11.1954
6.	श्री मोहनलाल सुखाड़िया	13.11.1954 - 11.04.1957
7.	श्री मोहनलाल सुखाड़िया	11.04.1957 - 11.03.1962
8.	श्री मोहनलाल सुखाड़िया	12.03.1962 - 13.03.1967
9.	राष्ट्रपति शासन	13.03.1967- 26.04.1967
10.	श्री मोहनलाल सुखाड़िया	26.04.1967- 09.07.1971
11.	श्री बरकतुल्लाखां	09.07.1971- 11.10.1973
12.	श्री हरि देव जोशी	11.10.1973 - 29.04.1977
13.	राष्ट्रपति शासन	30.04.1977- 21.06.1977
14.	श्री भैरोंसिंह शेखावत	22.06.1977 - 16.02.1980
15.	राष्ट्रपति शासन	17.02.1980 - 05.06.1980
16.	श्री जगन्नाथ पहाडिया	06.06.1980- 13.07.1981
17.	श्री शिवचरण माथुर	14.07.1981- 23.02.1985
18.	श्री हीरालाल देवपुरा	23.02.1985 - 10.03.1985
19.	श्री हरि देव जोशी	10.03.1985 - 20.01.1988
20.	श्री शिव चरण माथुर	20.01.1988- 04.12.1989
21.	श्री हरि देव जोशी	04.12.1989- 04.03.1990
22.	श्री भैरों सिंह शेखावत	04.03.1990 - 15.12.1992

विस्तारः-

*राजस्थान राज्य की **उत्तर से दक्षिण** तक की **कुल लंबाई 826 किलोमीटर** है तथा इसका विस्तार उत्तर में श्रीगंगानगर जिले के कोणा गाँव से दक्षिण में बाँसवाड़ा जिले की कुशलगढ़ तहसील के बोरकुंड गाँव तक है।*

*इसी प्रकार **पूर्व से पश्चिम तक** की **चौड़ाई 869 किलोमीटर** है तथा विस्तार पूर्व में धौलपुर जिले के जगमोहनपुरा की ढाणी, सिलाना गाँव, राजाखेड़ा तहसील से पश्चिम में जैसलमेर जिले के कटरा गाँव (सम-तहसील) तक है।*

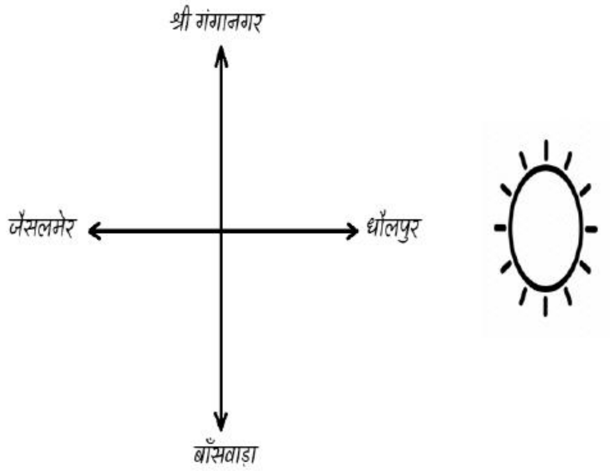

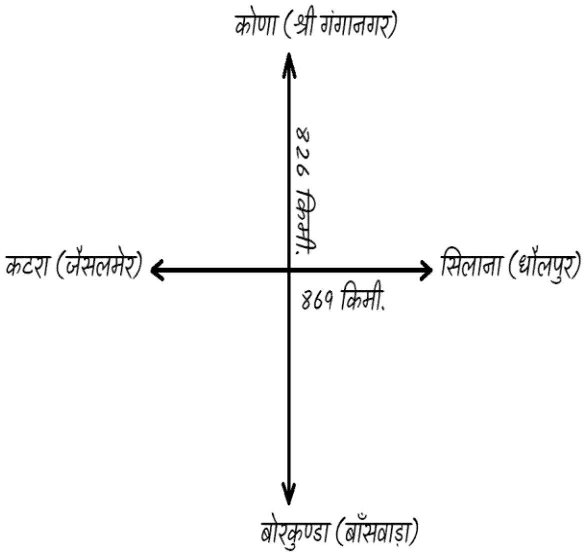

आकृति

*विषम कोणीय चतुर्भुज या **पतंग** के आकार के समान है।*

राज्य की स्थलीय सीमा 5920 किलोमीटर (1070 अंतर्राष्ट्रीय व 4850 अंतर्राज्यीय) है।

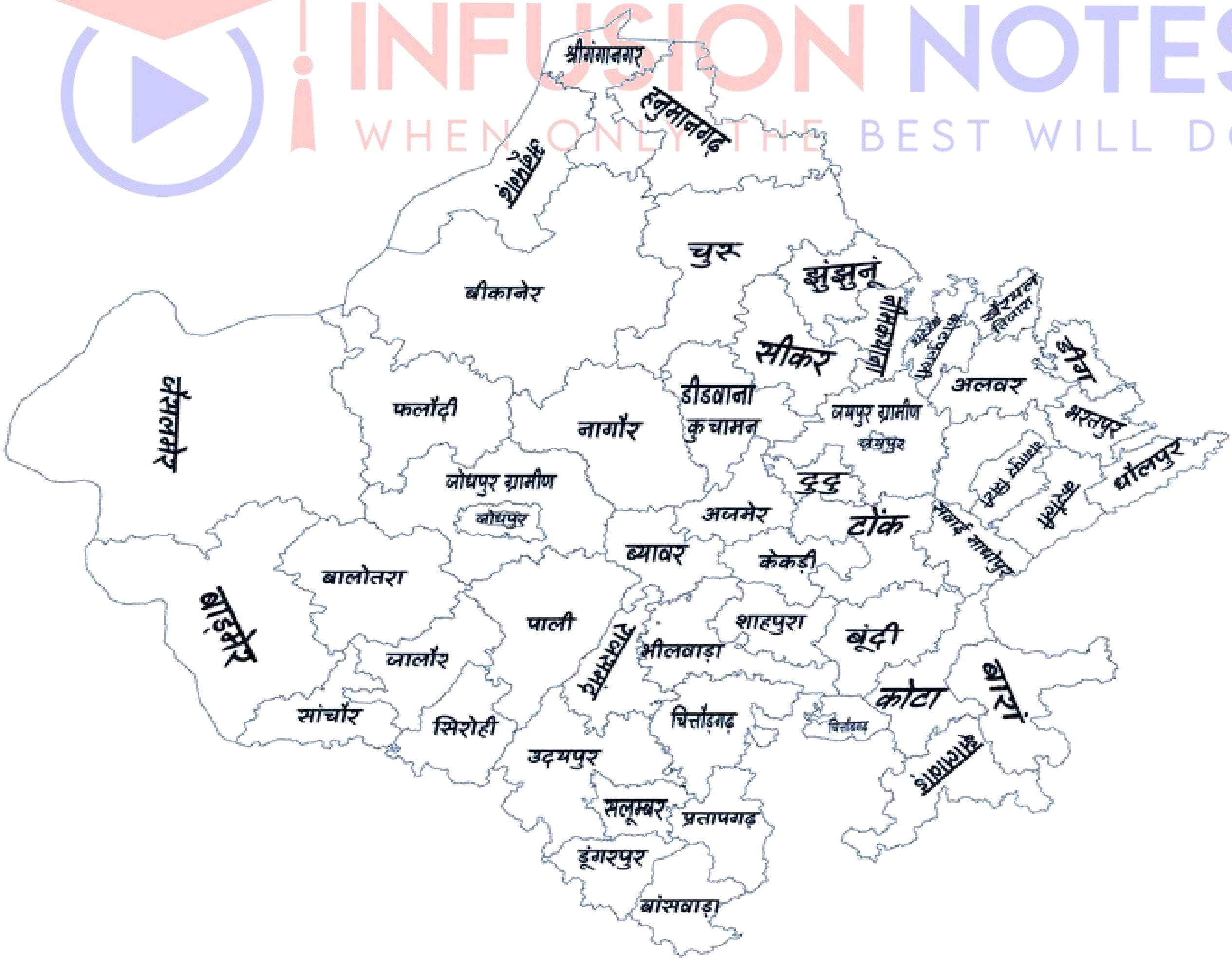

रेडक्लिफ रेखा

- रेडक्लिफ रेखा भारत और पाकिस्तान के मध्य स्थित है। इसके संस्थापक सर सिरिल एम रेडक्लिफ को माना जाता है।
- रेडक्लिफ रेखा 17 अगस्त 1947 को भारत विभाजन के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच सीमा बन गई।
- इसकी भारत के साथ कुल सीमा 3310 किलोमीटर है।

रेडक्लिफ रेखा पर भारत के चार राज्य स्थित हैं।

1. जम्मू-कश्मीर (1216 कि.मी.)
2. पंजाब (547 कि.मी.)
3. राजस्थान (1070 कि.मी.)
4. गुजरात (512 कि.मी.)

- रेडक्लिफ रेखा के साथ **राजस्थान की सर्वाधिक सीमा - (1070 कि.मी.)**
- रेडक्लिफ रेखा के साथ **सबसे कम सीमा- गुजरात (512 कि.मी.)**
- रेडक्लिफ रेखा के सर्वाधिक नजदीक राजधानी मुख्यालय - श्रीनगर
- रेडक्लिफ रेखा के सर्वाधिक दूर राजधानी मुख्यालय - जयपुर
- रेडक्लिफ रेखा पर क्षेत्र में बड़ा राज्य - राजस्थान
- रेडक्लिफ रेखा पर क्षेत्र में सबसे छोटा राज्य - पंजाब
- रेडक्लिफ रेखा के साथ राजस्थान की कुल सीमा **1070 कि.मी.** है। जो **राजस्थान के छः जिलों** से लगती है।

1. श्रीगंगानगर-210 कि.मी.
2. अनूपगढ़
3. बीकानेर-168 कि.मी.
4. फलौदी
5. जैसलमेर- 464 कि.मी.
6. बाड़मेर- 228 कि.मी.

रेडक्लिफ पर सर्वाधिक सीमा जैसलमेर तथा न्यूनतम सीमा रेखा फलौदी बनाता है।

- रेडक्लिफ रेखा राज्य में उत्तर में श्रीगंगानगर के **हिन्दूमल कोट** से लेकर दक्षिण - पश्चिम में बाड़मेर के बाखासर गाँव, सेडवा तहसील तक विस्तृत है।
- रेडक्लिफ रेखा पर पाकिस्तान के 9 जिले पंजाब प्रान्त का बहावलपुर, बहावल नगर व रहीमयारखान तथा सिंध प्रान्त के घोटकी, सुक्कुर, खैरपुर, संघर, उमरकोट व थारपाकर राजस्थान से सीमा बनाती हैं।

राजस्थान के साथ सर्वाधिक सीमा – बहावलपुर

राजस्थान के साथ न्यूनतम सीमा- खैरपुर

पाकिस्तान के दो प्रांत राजस्थान की सीमा को छूते हैं।

1. पंजाब प्रांत
2. सिंध प्रांत

- रेडक्लिफ रेखा एक कृत्रिम रेखा है।
- राजस्थान की रेडक्लिफ रेखा से सर्वाधिक सीमा जैसलमेर (464 कि.मी.) व न्यूनतम सीमा फलौदी की लगती है।
- रेडक्लिफ के नजदीक जिला मुख्यालय -अनूपगढ़
- रेडक्लिफ के सर्वाधिक दूर जिला मुख्यालय - बीकानेर
- रेडक्लिफ रेखा पर सबसे बड़ा जिला - जैसलमेर
- रेडक्लिफ रेखा पर सबसे छोटा जिला – श्रीगंगानगर

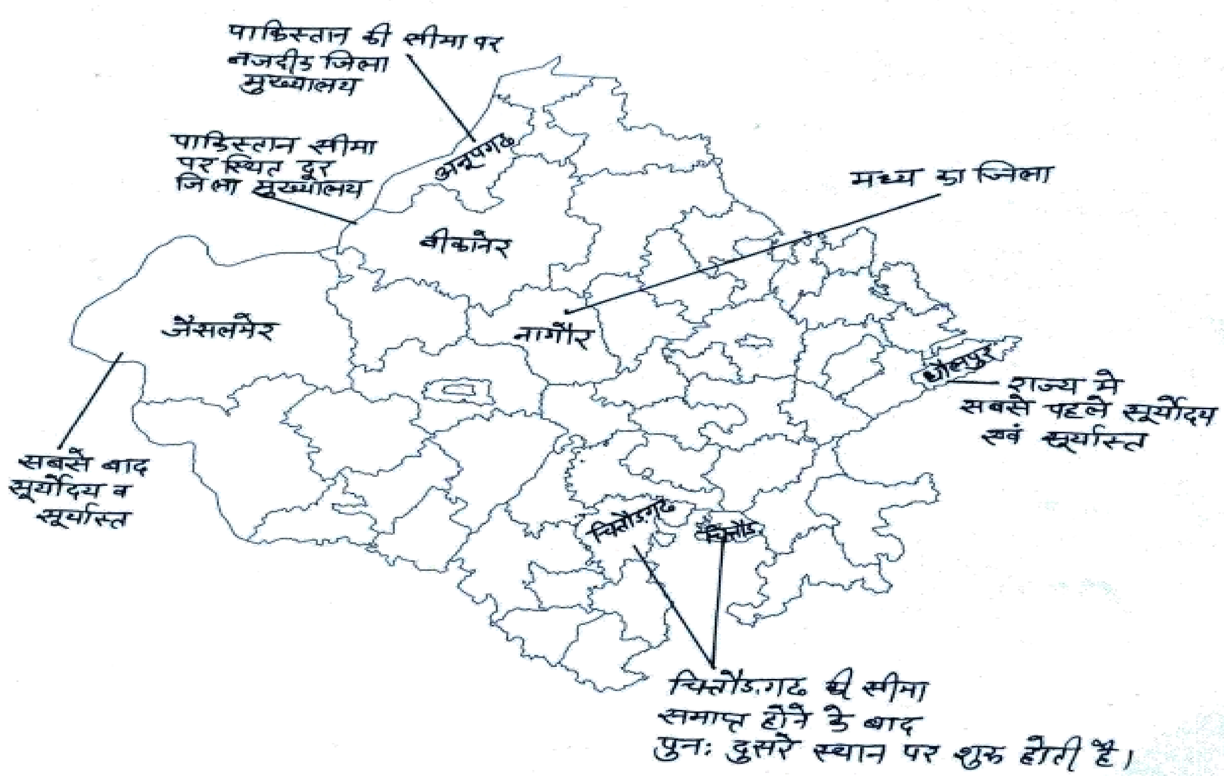

21. राजस्थान में बौद्ध धर्म केमठ कहाँ मिले है? -विराट नगर जयपुर।
22. राजस्थान का अभिलेखागार कहाँ स्थित है? - बीकानेर।
23. एनाल्स एंड एंटीक्विटिस ऑफ राजस्थान किसने लिखी थी? – कर्नल जेम्स टॉड ने।
24. जेम्स टॉड कहाँ के पॉलिटिकल एजेंट थे? – पश्चिमी राजस्थान स्टेट का।
25. 1567 – 1568 ई. में चित्तौड़ के मुगल घेरे के दौरान दो राजपूत सामंतों ने दुर्ग की रक्षा करते हुए अपने प्राण त्याग दिए? - जयमल, पत्ता (फत्ता) ।
26. हल्दी घाटी युद्ध में एक मात्र मुस्लिम सरदार जो महाराणा प्रताप के साथ था? – हाकिम खांसरी।
27. मेवाड़ प्रजामंडल की स्थापना किसने की -माणिक्य लाल वर्मा।
28. राजपूताना के किस राज घराने ने प्रजामंडल को संरक्षण दे रखा था- झालावाड़
29. राजस्थान के किस क्षेत्र ने कृषक आन्दोलन प्रारंभ करने में पहल की - मेवाड़।
30. बिजोलिया किसान आन्दोलन के प्रणेता कौन थे – साधू सीताराम दास।

प्रदेश के जिलों के आधुनिक उपनाम

गंगानगर	फलों की टोकरी, राजस्थान का अन्नागार, बागानों की भूमि
बीकानेर	राती घाटी, ऊन का घर
जैसलमेर	स्वर्ण नगरी, राजस्थान का अंडमान, हवेलियों का शहर, झरोखों की नगरी, रेगिस्तान का गुलाब, येलो सिटी, गलियों का शहर, पंखों का नगर, म्यूजियम सिटी
जोधपुर	ब्लू सिटी / नीला शहर, सन सिटी / सूर्य नगरी, मरुस्थल का प्रवेश द्वार / सिंहद्वार, राजस्थान की विधि नगरी
बाड़मेर	राजस्थान की थार नगरी, राजस्थान का खजुराहो
भीलवाड़ा	राजस्थान का मेनचेस्टर, वस्त्र नगरी, जू ऑफ़ मिनरल, टेक्सटाइल सिटी
सिरोही	राजस्थान का शिमला
राजसमन्द	राजस्थान की थर्मोपोली
नागौर	औजारों की नगरी, राजस्थान का धातु नगर
सीकर	हाईटेक सिटी
नीमकाथाना	ताम्बा नगरी
जयपुर	पिंक सिटी / गुलाबी नगरी, पूर्व का पेरिस, हेरिटेज सिटी
अलवर	राजस्थान का स्कॉटलैंड, राजस्थान का सिंह द्वार, राजस्थान का पूर्वी कश्मीर
भरतपुर	राजस्थान का पूर्वी सिंह द्वार, राजस्थान का प्रवेश द्वार
धौलपुर	राजस्थान का पूर्वी प्रवेश द्वार, रेड डायमंड
करौली	डांग की रानी
अजमेर	राजस्थान का हृदय, अंडे की टोकरी, सांप्रदायिक सौहार्द का शहर, राजपूताना की कुंजी, अरावली का अरमान
बूंदी	बावडियों का शहर (सिटी ऑफ़ स्टेपवेल्स), वैभव नगरी
बारां	वराह नगरी, मिनी खजुराहो (भंडदेवरा)
झालावाड़	राजस्थान का चेरापूंजी, विरासत का शहर, घंटियों का शहर (झालरापाटन)
चित्तौड़गढ़	राजस्थान का गौरव
प्रतापगढ़	राधा नगरी, कांठल
कोटा	शिक्षा का तीर्थ स्थल, राजस्थान का नालंदा, औद्योगिक नगरी, राजस्थान का कानपुर, उद्यानों का नगर
डूंगरपुर	पहाड़ों की नगरी
उदयपुर	मेवाड़, प्राग्वाट, मेदपाट, झीलों की नगरी, पूर्व का वेनिस, सैलानियों का स्वर्ग, माउंटेन और फाउंटेन का शहर, एशिया का विएना, लेक सिटी, जिंक नगरी, ऑस्ट्रेलिया जैसी आकृति

राजस्थान के प्राचीन क्षेत्र और वर्तमान स्थिति

योद्धेय प्रदेश	अनूपगढ़, गंगानगर, हनुमानगढ़
भटनेर	हनुमानगढ़
शेखावाटी प्रदेश	झुंझुनू, सीकर, चुरु, नीमकाथाना
कुरुक्षेत्र, शाल्व जनपद, आलोर	अलवर

- पश्चिमी मरुस्थलीय क्षेत्र में वायु भार 997 मिलीबार अंकित किया जाता है जो अपनी ओर हवाओं को चारों ओर से आकर्षित करता है।

ये भी जानें :-

- **औसत तापमान-38° सेन्टीग्रेड**
- **सर्वाधिक तापमान वाला जिला - चूरू**
- **न्यूनतम तापमान वाला जिला - चूरू**
- **सर्वाधिक दैनिक तापांतर वाला जिला -जैसलमेर**
- **सर्वाधिक वार्षिक तापान्तर वाला जिला - चूरू**
- राज्य में सबसे गर्म महीना - जून
- राज्य में सबसे गर्म दिन - 21 जून
- राज्य का सबसे लम्बा दिन व सबसे छोटी रात - 21 जून
- **राज्य का सर्वाधिक शुष्क स्थान- फलौदी**

पश्चिमी मरुस्थल के गर्म होने के पीछे मुख्य कारण इस क्षेत्र में पाई जाने वाली बलुई / रेतीली मिट्टी है, जबकि पूर्वी राजस्थान के गर्म होने का मुख्य कारण इस क्षेत्र में पाए जाने वाले सैण्डस्टोन (बलुआ पत्थर) है।

ग्रीष्म ऋतु में आने वाले प्रमुख स्थानीय तूफान

1. **काल बैसाखी :**

- पश्चिम बंगाल और असम में वैशाख माह में शाम के समय चलने वाली भयंकर व विनाशकारी वर्षा युक्त पवनें जो अपनी कुख्यात प्रकृति के लिए जानी जाती है।
- इनके आने से भयंकर तबाही होती है। इसलिए इसे काल बैसाखी कहा जाता है। असम में इसे बारदोली छीड़ा कहते हैं। जो चाय, पटसन, चावल की खेती के लिए लाभदायक है।

2. **आम्र वर्षा:** - वर्षा ऋतु से पूर्व कर्नाटक व केरल के तटीय भागों में होने वाली वर्षा जो आम की खेती के लिए लाभदायक है। इसलिए इसे आम्र वर्षा कहते हैं।

3. **फूलों वाली वर्षा:** - वर्षा ऋतु पूर्व केरल में होने वाली वर्षा जो कहवा की खेती के लिए लाभदायक है। अतः वर्षा के कारण कहवा के फूल खिलने लगते हैं। इसलिए इसे फूलों वाली वर्षा कहते हैं।

4. लू: ग्रीष्म ऋतु में दोपहर के समय चलने वाली **गर्म, शुष्क व पीड़ा दायक पवनों को लू कहा जाता है। जो उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व की ओर प्रवाहित होती हैं।**

2. वर्षा ऋतु (मध्य जून से सितम्बर)

- **राजस्थान में लगभग 90% वृष्टि / वर्षा जुलाई से सितम्बर के दौरान होती है।** राजस्थान में अधिकांश वर्षा 'मानसून' से होती है।
- राजस्थान में मानसून वर्षा दक्षिण-पश्चिमी से उत्तर-पूर्व की ओर बढ़ती है, लेकिन **राजस्थान में उत्तर-पश्चिम से दक्षिण पूर्व की ओर राजस्थान में वर्षा की मात्रा में वृद्धि होती है।**
- मानसूनी पवनें वह मौसमी पवनें होती हैं जो वर्ष में दो बार क्रमिक रूप से अपना मार्ग बदलती है। यह मानसून 2 प्रकार का होता है-

उच्च वायुदाब

1. **ग्रीष्मकालीन मानसून (दक्षिण-पश्चिम मानसून)**-

- मानसूनी पवनें ग्रीष्म ऋतु में समुद्र से स्थल की ओर बहती हैं क्योंकि गर्मियों में सूर्य उत्तरी गोलार्द्ध में सीधा चमकता है।
- अतः सूर्य की सीधी किरणें पड़ने के कारण 'तिब्बत का पठार' अत्यन्त गर्म हो जाता है, जिससे वहाँ निम्न वायु दाब का केन्द्र बन जाता है।
- जबकि दक्षिण गोलार्द्ध में स्थित हिन्द महासागर में सूर्य की किरणों के तिरछा पड़ने के कारण हिन्द महासागर में उच्च वायुदाब का केन्द्र बनता है और फेरल के नियम के अनुसार हवा हमेशा उच्च वायुदाब से निम्न वायुदाब की ओर चलने लगती है।
- इसी कारण हिन्द महासागर से हवाएँ आर्द्रता लेते हुए तिब्बत के पठार की ओर चलने लगती है। दक्षिण पश्चिम दिशा से चलने के कारण इसे 'दक्षिण-पश्चिम का मानसून' भी कहते हैं।
- ये पवनें मार्ग में पड़ने वाले बादलों को धकेलकर भारत में प्रवेश करती है।
- **ध्यातव्य रहे** - मानसूनी हवाएँ हमेशा उच्च वायुदाब से निम्न वायुदाब की ओर बढ़ती है, तो वहीं मानसून के द्वारा किसी एक स्थान पर वर्षा हो जाने पर उसी स्थान पर होने वाली अगली वर्षा के मध्य का समय अनिश्चित होता है, जिसे **मानसून की विभंगता** कहा है जाता है।

बादलों के प्राप्ति स्थान के आधार पर इसकी दो शाखाएँ होती हैं-

(i) **अरब सागर की शाखा**-

- प्रत्येक वर्ष लगभग 1 - 5 जून मध्य केरल के तट से अरब सागर के बादल भारत में सर्वप्रथम प्रवेश करते हैं। यहाँ से उत्तर में जाने पर मानसून प्रवेश की तिथि बढ़ती है जबकि वर्षा की मात्रा घटती जाती है।
- **राजस्थान में अरब सागर के कुछ बादल गुजरात के रास्ते लगभग 15 - 20 जून के मध्य 'बाँसवाड़ा' (राजस्थान में मानसून का प्रवेश द्वार) जिले से प्रवेश करते हैं।**
- अरब सागर के ये बादल **अरावली पर्वत के समानांतर होने के कारण राज्य में पर्याप्त वर्षा नहीं कर पाते** और अरब सागर की शाखाएँ पश्चिमी घाट पहाड़ के पश्चिम में स्थित मालाबार तट, कोंकण तट, सौराष्ट्र तट की ओर बारिश करती हुई आगे बढ़ती है।

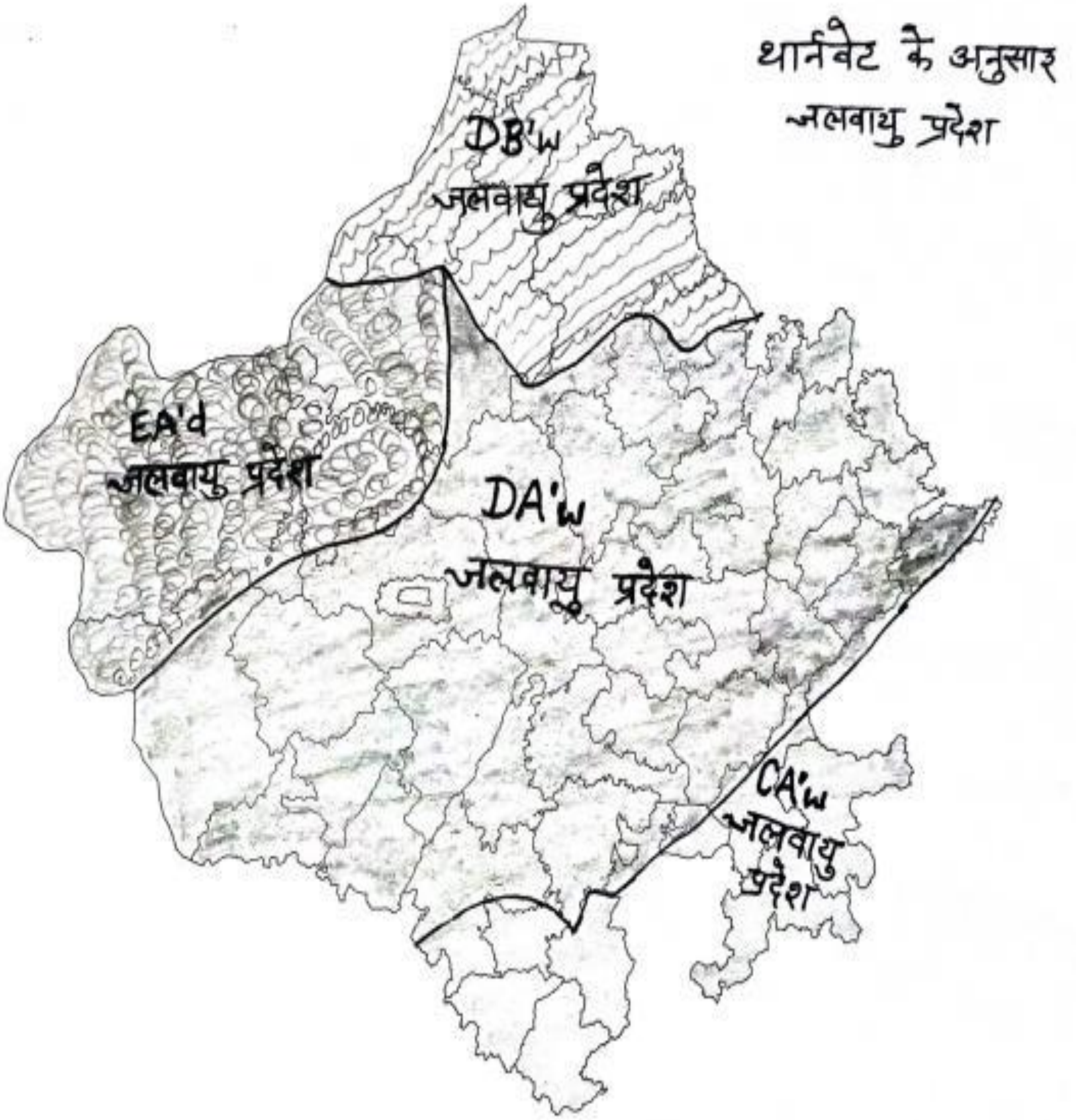

- थार्नवेट ने सन 1931 ई. में वर्षा के आधार पर विश्व जलवायु प्रदेशों का चार भागों में वर्गीकरण किया है।
- थार्न्वेट के अनुसार राजस्थान के जलवायु प्रदेश –

1. <u>EA'd / मरुद्भिद (उष्ण शुष्क) जलवायु प्रदेश</u> -

क्षेत्र- जैसलमेर, फलौदी, उत्तरी पश्चिमी बाड़मेर व दक्षिणी पश्चिमी बीकानेर ।

इस जलवायु प्रदेश में औसत वर्षा 10-15 से.मी. होती है।

औसत तापमान – गर्मियों में 40 से 45 डिग्री सेन्टीग्रेड तथा सर्दियों में 10 से 15 डिग्री सेन्टीग्रेड ।

वनस्पति – मरुस्थलीय

2. <u>CA'w / उप आर्द्र (शुष्क एवं अर्द्ध शुष्क) जलवायु प्रदेश</u> –

क्षेत्र- डूंगरपुर, प्रतापगढ़, उदयपुर, सलूम्बर, बांसवाडा, कोटा, बारां, झालावाड़ ।

इस जलवायु प्रदेश का प्रतिनिधित्व डूंगरपुर जिला करता है।

औसत वर्षा – 80-100 से.मी.

औसत तापमान – 25 से 30 डिग्री सेन्टीग्रेड (ग्रीष्मकाल में) तथा 15 से 20 डिग्री सेन्टीग्रेड (शीतकाल में)

इस जलवायु प्रदेश में सवाना प्रकार की वनस्पति पायी जाती है।

(अ) <u>खारे पानी की झीलें –</u>

1. <u>सांभर झील</u>

- **राजस्थान के जयपुर – फुलेरा मार्ग पर जयपुर से लगभग 65 किलोमीटर दूर स्थित सांभर झील भारत की सबसे बड़ी प्राकृतिक एवं खारे पानी की झील है।**
- इस झील का विस्तार 3 जिलों में है – **जयपुर ग्रामीण, अजमेर और नागौर,** लेकिन सर्वाधिक विस्तार जयपुर जिले में है और इसका प्रशासनिक अधिकार नागौर जिले का है।
- इस झील की लंबाई दक्षिण - पूर्व से उत्तर - पश्चिम की ओर लगभग 32 किलोमीटर है और चौड़ाई लगभग 3 से 12 किलोमीटर है इसका कुल अपवाह क्षेत्र लगभग 500 वर्ग किलोमीटर है।
- **सांभर झील में मेंथा नदी, रूपनगढ़ नदी, खारी नदी और खंडेला नदी आकर मिलती हैं। इस झील पर भारत सरकार की "हिंदुस्तान साल्ट लिमिटेड कंपनी" द्वारा नमक उत्पादन कार्य किया** जा रहा है ।
- हिंदुस्तान साल्ट लिमिटेड की स्थापना 1964 ई. में की गयी । इस झील में प्रति 4 मीटर की गहराई पर 350 लाख टन नमक उत्पादन होता है जो **भारत के कुल उत्पादन का 8.7% सांभर झील** से ही उत्पादित होता है।

इसे 1990 ई. में रामसर साईट में शामिल किया गया।
इस झील में **'क्यारी पद्धति'** द्वारा किया जाता है।
सांभर झील में सर्दियों में फ्लेमिन्गोज (राजहंस) पक्षी उत्तरी एशिया से बड़ी संख्या में आते है।

इस झील से संबंधित अन्य महत्त्वपूर्ण तथ्य -

- सांभर झील "स्वाईसरुबीना" नामक शैवालों के लिए प्रसिद्ध है । इस शैवाल से 60% प्रोटीन प्राप्त होता है।
- यह झील अन्य महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं के लिए भी जानी जाती है जैसे -
- तीर्थ स्थली देव्यानी अर्थात् तीर्थों की नानी,
- शाकंभरी माता का मंदिर,
- संत हमीदुद्दीन की पुण्य भूमि,
- जहाँगीर की ननिहाल,
- अकबर की विवाह स्थली
- चौहानों की राजधानी
- ऐसा माना जाता है कि **इस झील का निर्माण बिजोलिया शिलालेख के अनुसार चौहान वंश के संस्थापक वासुदेव चौहान द्वारा** करवाया गया था।

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से विभिन्न परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें - (Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - https://shorturl.at/qBJ18 (74 प्रश्न, 150 में से)

RAS Pre 2023 - https://shorturl.at/tGHRT (96 प्रश्न, 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6UR0

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये
RAS Pre. 2023	01 अक्तूबर 2023	96 प्रश्न (150 मेंसे)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)

whatsapp - https://wa.link/m8y06r 1 web.- https://shorturl.at/fpKN5

SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

FREE SAMPLE

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

Our Selected Students

Approx. 137+ students selected in different exams. Some of them are given below -

Photo	Name	Exam	Roll no.	City
	Mohan Sharma S/O Kallu Ram	Railway Group - d	114195120370022	PratapNagar Jaipur
	Mahaveer singh	Reet Level- 1	1233893	Sardarpura Jodhpur
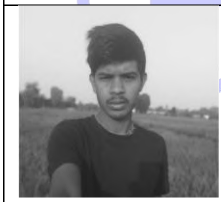	**Sonu Kumar Prajapati S/O Hammer shing prajapati**	SSC CHSL tier-1	2006018079	Teh.- Biramganj, Dis.- Raisen, MP
N.A	**Mahender Singh**	EO RO (81 Marks)	N.A.	teh nohar , dist Hanumangarh
	Lal singh	EO RO (88 Marks)	13373780	Hanumangarh
N.A	**Mangilal Siyag**	SSC MTS	N.A.	ramsar, bikaner

whatsapp - https://wa.link/m8y06r 3 web.- https://shorturl.at/fpKN5

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	MONU S/O KAMTA PRASAD	SSC MTS	3009078841	kaushambi (UP)
	Mukesh ji	RAS Pre	1562775	newai tonk
	Govind Singh S/O Sajjan Singh	RAS	1698443	UDAIPUR
	Govinda Jangir	RAS	1231450	Hanumangarh
N.A	**Rohit sharma s/o shree Radhe Shyam sharma**	RAS	N.A.	Churu
	DEEPAK SINGH	RAS	N.A.	Sirsi Road , Panchyawala
N.A	**LUCKY SALIWAL s/o GOPALLAL SALIWAL**	RAS	N.A.	AKLERA , JHALAWAR
N.A	**Ramchandra Pediwal**	RAS	N.A.	diegana , Nagaur

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Monika jangir	RAS	N.A.	jhunjhunu
	Mahaveer	RAS	1616428	village-gudaram singh, teshil-sojat
N.A	**OM PARKSH**	RAS	N.A.	Teshil-mundwa Dis- Nagaur
N.A	**Sikha Yadav**	High court LDC	N.A.	Dis- Bundi
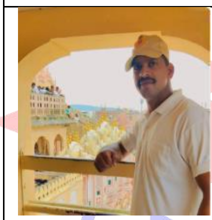	**Bhanu Pratap Patel s/o bansi lal patel**	Rac batalian	729141135	Dis.-Bhilwara
N.A	**mukesh kumar bairwa s/o ram avtar**	3rd grade reet level 1	1266657	JHUNJHUNU
N.A	**Rinku**	EO/RO (105 Marks)	N.A.	District: Baran
N.A.	**Rupnarayan Gurjar**	EO/RO (103 Marks)	N.A.	sojat road pali
	Govind	SSB	4612039613	jhalawad

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Jagdish Jogi	EO/RO (84 Marks)	N.A.	tehsil bhinmal, jhalore.
	Vidhya dadhich	RAS Pre.	1158256	kota

And many others……

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

Whatsapp करें – https://wa.link/m8y06r

Online order करें – https://shorturl.at/fpKN5

Call करें - 9887809083

FREE SAMPLE